सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 364, नई दिल्ली । मंगलवार, 11 फरवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 भाजपा की डबल इंजन की सरकार आने के बावजूद लोग असुरक्षित

06 कहानी: बिंदास लड़की

08 मानसिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा: संतुलन और संयम का महत्व

दिल्ली ईवी नीति 2.0 में 2027 तक 95 प्रतिशत नए इलेक्ट्रिक वाहनों का लक्ष्य, हो सकता है 1 अप्रैल से लागू

संजय बाटला

दिल्ली ईवी नीति 2.0 के साथ दिल्ली सरकार ने 2027 तक 95 प्रतिशत नए इलेक्ट्रिक वाहनों के पंजीकरण का लक्ष्य रखा है। इस नीति के तहत सभी सीएनजी ऑटो-रिक्शा टैक्सियां और हल्के वाणिज्यिक वाहनों को चरणबद्ध तरीके से ईवी में बदला जाएगा। यह नीति एक अप्रैल से लागू हो सकती है। ईवी नीति को प्रोत्साहित करने के लिए स्टेट ईवी फंड बनाया जाएगा।

नई दिल्ली। परिवहन मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने दिल्ली में ईवी 2.0 यानी इस नीति के दूसरे चरण की समीक्षा की और कहा कि दिल्ली ईवी पॉलिसी 2.0 का लक्ष्य 2027 तक 95 प्रतिशत नए इलेक्ट्रिक व्हीकल का पंजीकरण करना है। प्रस्तावित दिल्ली ईवी पॉलिसी 2.0 में सभी सीएनजी ऑटो-रिक्शा, टैक्सियों और हल्के वाणिज्यिक वाहनों को चरणबद्ध तरीके से ईवी (इलेक्ट्रिक वाहनों) में बदला जाएगा। यह नीति एक अप्रैल से लागू हो सकती है।

उन्होंने कहा कि ईवी नीति को प्रोत्साहित करने के लिए स्टेट ईवी फंड बनाया जाएगा। जिसे ग्रीन लेवी, प्रदूषण सेस और एग्रीगेटर लाइसेंस शुल्क के माध्यम से जमा किया जाएगा। नई नीति का लक्ष्य दिल्ली में सड़कों पर इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना है, जिससे दिल्ली देश में ईवी नीति को अपनाने में अग्रणी भूमिका निभा सके।

ईवी पॉलिसी 2.0 के सभी बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा

परिवहन मंत्री ने समीक्षा के दौरान नई ईवी पॉलिसी 2.0 के उद्देश्यों को अमल में लाने के लिए सभी बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की। प्रस्तावित सब्सिडी पर भी चर्चा की।कहा कि इससे राजधानी में वायु प्रदूषण में कमी आएगी। सरकार प्राथमिकता के आधार पर ई-बसों को दिल्ली की सड़कों पर उतारेगी।

ईवी मैकेनिक और ड्राइवरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

सरकार ईवी नीति को प्रमोट करने के लिए नीति 2.0 में इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया, ई-एलसीवी (हल्के वाणिज्यिक वाहन) और ई-ट्रकों के खरीद को प्रोत्साहित करेगी। नीति में आइसीई इंजन वाहनों से ईवी में बदलाव को प्रोत्साहित करने के लिए स्क्रैपिंग और रेट्रोफिटिंग प्रोत्साहन योजना भी शामिल है। दिल्ली कौशल और उद्यमिता विश्वविद्यालय (डीएसईयू) के सहयोग से ईवी मैकेनिक और ड्राइवरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे।

नए चार्जिंग स्टेशन बनाए जाएंगे

ईवी नीति में ईवी वाहनों के परिचालन के साथ-साथ उनके लिए चार्जिंग स्टेशन को भी स्थापित करने की नीति शामिल है। इसमें सार्वजनिक चार्जिंग पॉइंट स्थापित करने की समुचित प्लान है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

सड़कों पर अनियंत्रित यातायात . परिणाम, दुर्घटनायें

लगभग सभी देशों में यातायात से होने वाली दुर्घटनाएं सबसे ज्यादा होती है । इनका अनुपात विकासशील एवं विकसित देशों में लगभग एक सा होता है । जहां तक भारत का सवाल है भारत में सड़क यातायात का अनुपात बहुत ज्यादा है । भारत में सड़क दुर्घटनाएं निम्न कारणों से ज्यादा होती हैं : x सड़कों पर अनियंत्रित यातायात का होना । x यातायात के नियमों का पालन न करना । x सड़कों पर दुपहिया गाड़ियां ज्यादा होना । x सभी प्रकार की गाड़ियों (दुपहिया , चारपहिया) का साथ - साथ एक ही सड़क पर चलना । बड़ी संख्या में पुरानी , खराब गाड़ी का सड़क पर चलना । x सड़कों पर आवारा पशुओं का जमघट वाहनों के लिए सभी को लायसेंस दे देना । x खराब सड़कें होना , सड़कों पर प्रकाश की व्यवस्था न होना । x यातायात के संकेतों कान होना । ज्यादातर दुर्घटनाएं उन स्थानों पर ज्यादा होती हैं , जहां मनुष्य के लिए नया स्थान होता है । दुर्घटनाएं ज्यादातर 15-35 साल की उम्र में ज्यादा होती हैं , क्योंकि युवावस्था में वाहन चलाना उत्साहवर्धक रहता है, अतः युवावस्था से जुड़े कारण जैसे अत्यधिक तीव्र गति से वाहन चलाना । पर्याप्त अनुभव की कमी होना । आत्मविश्वास की अधिकता । गलत निर्णय लेना । x मानसिक असंतुलन , क्रोधित होना । समय - समय पर उन्माद में आना ।संभावना होती है । दुर्घटना से बचने के लिए आत्मरक्षा अत्यंत आवश्यक है । अतः यदि आत्मरक्षा के साधन जैसे हेलमेट , सीट बेल्ट नहीं बांधे जाते हैं तब दुर्घटनाएं होने की ज्यादा सड़क दुर्घटनाओं के लिए उत्तेजित करने वाले कारण अत्यंत योगदान देते हैं जैसे नशायुक्त पदार्थ का सेवन कर वाहन चलाना x एल्कोहल , गांजा , भांग आदि । यह कारण दुर्घटनाओं के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार हैं । x अत्यधिक भावुकता में वाहन चलाना भी दुर्घटना का कारण बनता है । x सुरक्षा से संबंधित जानकारी लोगों को देना अत्यंत जरूरी है , लोगों को दुर्घटना से बचने के उपायों के बारे में शिक्षित करना चाहिए । समय - समय पर शिक्षासंचार जानकारी के माध्यम से लोगों तक दुर्घटनाएं रोकने एवं दुर्घटना हो जाने पर जान बचाने के उपायों की जानकारी देना चाहिए । जैसे x सड़कों के किनारों पर बड़े - बड़े होर्डिंग लगाना , जिसमें दुर्घटना से बचने की जानकारी हो । x टीवी रेडियो में दुर्घटना से बचने हेतु छोटी - छोटी कहानियों के माध्यम से जानकारी देना । यह अत्यंत जरूरी है , केवल हेलमेट को लगाकर दो पहिया वाहन चलाने से हम बच सकते हैं । 30-35 प्रतिशत तक मृत्युको केवल हेलमेट लगाने से दूर किया जा सकता है । यह सुरक्षात्मक उपकरण है । दो पहिया वाहनों के लिए हेलमेट एवं चारपहिया वाहनों के लिए सीटका पट्टा । बच्चे (किशोर) जबदो पहिया वाहन चलाना सीख जाते हैं तब वह शौक - शौक में ज्यादा गाड़ी चलाते हैं और तेजी से भी चलाने लगते हैं , जिससे दुर्घटनाएं होने की संभावना बढ़ जाती है । अतः 18 साल से कम उम्र के बच्चों को वाहन चलाने पर पूर्णतः रोक लगानी चाहिए । यदि यातायात संबंधी कानून हम तैयार करें और उनका सख्ती से पालन करें तो दुर्घटना से बचा जा सकता है ।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद
हरदा मध्यप्रदेश,,,

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस चोकस : उल्लंघन करने वालों का हो रहा ड्राईविंग लाइसेंस जब्त

रिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए अब सख्त कार्रवाई की जाएगी। दिल्ली पुलिस और परिवहन विभाग के बीच बेहतर समन्वय के चलते अब बार-बार नियम तोड़ने वालों का ड्राइविंग लाइसेंस रद्द किया जाएगा। शराब पीकर खतरनाक तरीके से वाहन चलाने या अन्य गंभीर यातायात उल्लंघनों के लिए तीन या उससे अधिक बार पकड़े जाने पर चालकों के लाइसेंस रद्द किए जाएंगे।

नई दिल्ली। बार-बार ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों के ड्राइविंग लाइसेंस अब रद्द किए जाएंगे। ऐसी व्यवस्था पहले से ही है, लेकिन दिल्ली में डबल इंजन की सरकार न होने के कारण दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग ने दिल्ली पुलिस की मांगों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

अब जबकि डबल इंजन की सरकार है और दिल्ली पुलिस और दिल्ली सरकार के बीच बेहतर समन्वय है, तो पुलिस को उम्मीद है कि परिवहन विभाग अब उनकी सिफारिशों पर सख्त कार्रवाई करेगा।

चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस रद्द

यातायात विभाग के विशेष आयुक्त अजय चौधरी का कहना है कि इससे सड़क हादसों में कमी आएगी। शराब पीकर खतरनाक तरीके से वाहन चलाने या शराब पीकर खतरनाक तरीके से वाहन चलाने के लिए तीन या उससे अधिक बार पकड़े जाने पर चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस रद्द किए जाएंगे।

यातायात नियमों को सुव्यवस्थित करने और दुर्घटनाओं को कम करने के उद्देश्य से मोटर वाहन अधिनियम, 1988 लाया गया था। यातायात उल्लंघन और सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिए मुख्य अधिनियम में "मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019" के माध्यम से संशोधन किया गया, जिसमें यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ भारी जुर्माने का प्रावधान किया गया।

आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि कई चालक लगातार यातायात नियमों का उल्लंघन कर रहे थे। ऐसे उल्लंघनकर्ता अन्य सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए एक गंभीर खतरा हैं, जिससे बड़ी संख्या में सड़क दुर्घटनाएं होती हैं।

ऐसे में यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जरूरत है। इसलिए कीमती जान बचाने के लिए उन वाहन चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस रद्द करने की सिफारिश की जाती है, जिन्होंने मोटर वाहन अधिनियम, 1988 की धारा 184 यानी शराब पीकर खतरनाक तरीके से वाहन चलाना या 185 यानी शराब पीकर खतरनाक तरीके से वाहन चलाना तीन या उससे अधिक बार उल्लंघन किया है।

इसी तरह, उन व्यक्तियों के ड्राइविंग लाइसेंस भी रद्द किए जाने चाहिए, जिन पर यातायात नियमों के अन्य उल्लंघनों के लिए पांच या उससे अधिक बार मुकदमा चलाया जा चुका है। यह कार्रवाई उन वाहन चालकों के लिए सबक होगी, जो अक्सर यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं। इस मुद्दे पर जल्द से जल्द कार्रवाई शुरू की जा सकती है।

हादसे की पिछले आंकड़ें

वर्ष	सड़क दुर्घटना में मौत	कुल हादसे	घायलों की संख्या	मरने वालों की संख्या
2021	1206	4720	4273	1239
2022	1428	5652	5201	1461
2023	1432	5834	5470	1457
2024	1398	5416	5030	1431

मानसिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा: संतुलन और संयम का महत्व : डॉ अंकुर शर्मा

डॉ. अंकुर शरण

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हर कोई तेज़ी से आगे बढ़ना चाहता है। सड़कों पर रफ्तार ही नहीं, बल्कि हमारी मानसिक स्थिति भी हमारी यात्रा को प्रभावित करती है। गाड़ी हमारी हो सकती है, लेकिन सड़क पर हमारी तहज़ीब और संस्कार ही हमारे वास्तविक व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। क्या कभी आपने सोचा है कि आपकी मानसिक स्थिति आपकी ड्राइविंग को कैसे प्रभावित करती है?

जब मन अशांत होता है, तो हमारी निर्णय लेने की क्षमता कमज़ोर हो जाती है। चिड़चिड़ापन, ग़ुस्सा, तनाव और अधीरता हमारी गाड़ी चलाने की शैली में झलकने लगती है। यह सिर्फ़ हमारे लिए नहीं, बल्कि सड़क पर चल रहे अन्य लोगों के लिए भी ख़तरा बन सकता है।

सड़क पर संयम क्यों ज़रूरी है?

जीवन अमूल्य है: सड़क पर जल्दबाज़ी, ओवरस्पीडिंग, और लापरवाही से हर साल लाखों लोग अपनी जान गंवा देते हैं। यह समझना ज़रूरी है कि गाड़ी की गति से ज़्यादा महत्वपूर्ण हमारा जीवन है।

घर पर कोई इंतज़ार कर रहा है: यह विचार ही हमें सतर्क बना सकता है कि हमारे घर पर कोई हमारा बेसब्री से इंतज़ार कर रहा है। एक पल की लापरवाही हमारे अपनों को जीवनभर के दर्द में डाल सकती है।

मानसिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा का सीधा संबंध: मानसिक तनाव या ग़ुस्से की स्थिति में वाहन चलाने से दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है। शोध बताते हैं कि जो लोग शांत मन से ड्राइव करते हैं, वे कम दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं।

कैसे बनाएं सड़क यात्रा को सुरक्षित और मानसिक रूप से सुखद?

✔ गति पर नियंत्रण रखें: सड़क पर हमारी गाड़ी की गति उतनी ही होनी चाहिए जितनी हमारे मन की स्थिरता। तेज़ रफ़्तार न केवल ख़तरनाक होती है, बल्कि यह मानसिक तनाव को भी बढ़ाती है।

✔ सड़क पर धैर्य रखें: यदि कोई ट्रैफ़िक में ग़लती कर दे तो ग़ुस्सा करने या रिएक्ट करने के बजाय शांत रहें। संयम से काम लें और आगे बढ़ें।

✔ अपनी मानसिक स्थिति पर ध्यान दें: यदि आप तनाव में हैं, तो वाहन चलाने से पहले थोड़ा ब्रेक लें, गहरी साँस लें और अपने मन को स्थिर करें।

✔ सकारात्मक सोच अपनाएं: सड़क पर दूसरों के प्रति सहानुभूति और सहयोग की भावना रखें। यह केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक सामाजिक ज़िम्मेदारी भी है।

सड़क पर हमारा आचरण हमारे संस्कारों का प्रतिबिंब होता है। सही मानसिक संतुलन और सड़क पर संयम रखना सिर्फ़ एक अच्छी ड्राइविंग आदत नहीं, बल्कि एक ज़रूरी जीवनशैली है। याद रखें, आपकी गाड़ी आपके पास हो सकती है, लेकिन आपकी तहज़ीब और अनुशासन ही आपको एक बेहतर नागरिक बनाते हैं।

तो अगली बार जब आप सड़क पर हों, तो सिर्फ़ अपनी मंज़िल पर नहीं, बल्कि अपनी मानसिक स्थिति पर भी ध्यान दें। जीवन अनमोल है—इसे संयम और समझदारी से जिएं।

ROADSAFETYSQUAD@GMAIL.COM
X@ROADSAFETYSQUAD

भावुक प्रवृत्ति के होते है, मिथुन राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक

नक्षत्र मंडल में जब मृगशिरा नक्षत्र के तीसरे चरण से लेकर पुनर्वसु नक्षत्र के तीसरे चरण तक चंद्रमा का गोचर होता है। तब चंद्रमा मिथुन राशि में माना जाता है। मिथुन राशि वायु तत्व वाली,पश्चिम दिशा की स्वामिनी,शूद्र वर्ण वाली, द्विस्वभाव वाली पुरुष प्रकृति की शूद्र वर्ण वाली राशि है। इस राशि के लोगो पर बुध,मंगल,राहु ग्रहों का प्रभाव देखने को मिलता है।कालपुरुष की कुंडली में इस राशि से कंधे, हाथों और बाहुओं का विचार किया जाता है।

गुण और स्वभाव : मिथुन राशि के लोग मध्यम कद काठी के,मोटी गर्दन वाले,घुंघराले बाल लिए ,मनमोहक छवि के होते हैं। इनकी थोड़ी में गड्ढा होता है और हांथ पतले होते है। मिथुन राशि के लोग

पढ़ने लिखने के शौकीन,तीक्ष्ण बुद्धि वाले होते हैं। इन्हे इंडोर खेल में काफी रुचि होती है। यह काफी तार्किक और बातूनी तथा जिज्ञासु प्रवृति के होते हैं। मिथुन राशि के लोग काफी कामुक और प्रेम सक्रिय होते हैं। जीवन साथी से जल्दी गुस्सा होना फिर जल्दी मान जाना इनका स्वाभाविक गुण होता है। कभी कभी यह चिड़चिड़े हो जाते हैं तथा जिंदादिल होने की वजह से धोखे के शिकार हो जाते हैं।

विपरीत लिंग के लोगो के साथ घूमना,दोस्ती करना इन्हे काफी भाता है। मिथुन राशि के लोग काफी संवेदनशील और परिवर्तनशील होते हैं। यह किसी भी कार्य की योजना बनाने में काफी कुशल होते हैं।

कैरियर : मिथुन राशि के लोग कुशल गणितज्ञ,मैनेजर,लेखक,कवि, बैंकिंग अधिकारी,आयात निर्यात,टेलीफोन संचालक,चिकित्सक, समीक्षक,अंतरिक्ष अनुसंधान,जुआ, लॉटरी,शेयर आदि के दलाल, कॉमेंटेटर, गायक,एयर फोर्स,क्लर्क,सूती वस्त्र उद्योग,टीचिंग आदि में अपना कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

रोग : मिथुन राशि के लोगो को थायरॉयड, टी बी,सर्दी खांसी, अतिसार,हड्डी टूटना,निमोनिया या छाती से सम्बन्धित रोग आदि हो सकते हैं।

भाग्यशाली दिन : सोम,बुध,गुरु और शुक्र

भाग्यशाली रंग : हरा,पीला और सफेद

भाग्यशाली अंक :3,5,6,7

शुभ रत्न : पन्ना

उपाय : मिथुन राशि के जातक को पूर्णिमा का व्रत तथा भगवान विष्णु और गणेश जी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक बुधवार भगवान गणेश को गुड़ का भोग लगाएं।

नारी संगठन को समर्पित 'सरस्वती ताई आप्टे'

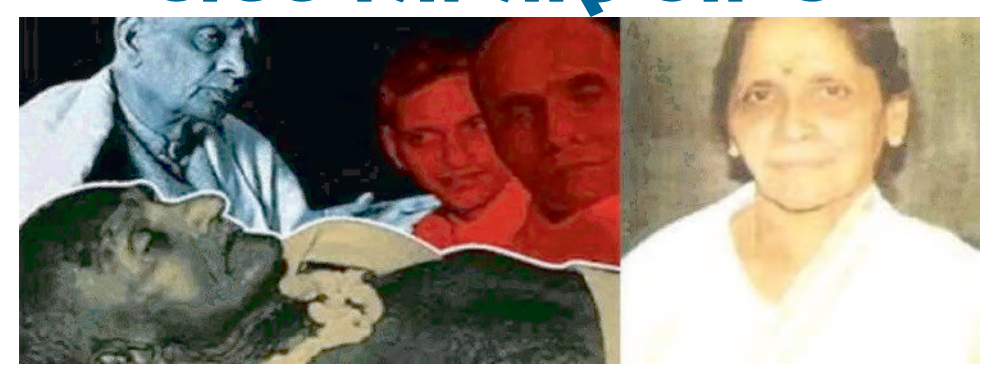

पुण्यतिथि जन्म : 1909, मृत्यु : 09 मार्च 1994[1]

1925 में हिन्दू संगठन के लिए डॉ. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य प्रारम्भ किया। संघ की शाखा में पुरुष वर्ग के लोग ही आते थे। उन स्वयंसेवक परिवारों की महिलाएँ एवं लड़कियाँ डॉ. हेडगेवार जी से कहती थीं कि हिन्दू संगठन के लिए नारी वर्ग का भी योगदान लिया जाना चाहिए। डॉ. हेडगेवार भी यह चाहते तो थे; पर शाखा में लड़के एवं लड़कियाँ एक साथ खेलें, यह उन्हें व्यावहारिक नहीं लगता था। इसलिए वे चाहते थे कि यदि कोई महिला आगे बढ़कर नारी वर्ग के लिए अलग संगठन चलाये तभी ठीक होगा। उनकी इच्छा पूरी हुई और 1936 में श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर (मौसी जी) ने 'राष्ट्र सेविका समिति' के नाम से अलग संगठन बनाया। इस संगठन की कार्यप्रणाली लगभग संघ जैसी ही थी। आगे चलकर श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर समिति की प्रमुख संचालिका बनीं। 1938 में पहली बार ताई आप्टे की भेंट श्रीमती केलकर से हुई थी। इस भेंट में दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया। मौसी जी से मिलकर ताई आप्टे के जीवन का लक्ष्य निश्चित हो गया। दोनों ने मिलकर राष्ट्र सेविका समिति के काम को व्यापकता एवं एक मजबूत आधार प्रदान किया। अगले 4-5 साल में ही महाराष्ट्र के प्रायः प्रत्येक जिले में समिति की शाखा खुल गयी। 1945 में समिति का पहला राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। ताई आप्टे की सादगी, संगठन क्षमता, कार्यशैली एवं वक्तृत्व कौशल को देखकर मौसी जी ने इस सम्मेलन में उन्हें प्रमुख कार्यवाहिका की जिम्मेदारी दी। जब तक शरीर में शक्ति रही।के

ताई आप्टे ने इसे भरपूर निभाया। उन दिनों देश की स्थिति बहुत खतरनाक थी। कांग्रेस के नेता विभाजन के लिए मन बना चुके थे। वे जैसे भी हो सत्ता प्राप्त करना चाहते थे। देश में हर ओर मुस्लिम आतंक का नंगा खेल हो रहा था। इनकी शिकार प्रायः हिन्दू युवतियाँ ही होती थीं। देश का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग इनसे सर्वाधिक प्रभावित था। आगे चलकर यही भाग पश्चिमी एवं पूर्वी पाकिस्तान बना। आजादी एवं विभाजन की वेला से कुछ समय पूर्व सिन्ध के हैदराबाद नगर से एक सेविका जेठी देवानी का मार्मिक पत्र मौसी जी को मिला। वह इस कठिन परिस्थिति में उनसे सहयोग चाहती थी। वह समय बहुत खतरनाक था। महिलाओं के लिए प्रवास करना बहुत ही कठिन था; पर सेविका की पुकार पर मौसी जी चुप न रह सकीं। वे सारा कार्य ताई आप्टे को सौंपकर चल दीं। वहाँ उन्होंने सेविकाओं को अन्तिम समय तक डटे रहने और किसी भी कीमत पर अपने सतीत्व की रक्षा का सन्देश दिया। 1948 में गांधी जी की हत्या के झूठे आरोप में संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। हजारों कार्यकर्ता जेलों में ठूँस दिये गये। ऐसे में उन परिवारों में महिलाओं को धैर्य बँधाने का काम राष्ट्र सेविका समिति ने किया। 1962 में चीन के आक्रमण के समय समिति ने घर-घर जाकर पैसा एकत्र किया और उसे रक्षामंत्री श्री चव्हाण को भेंट किया। 1965 में पाकिस्तानी आक्रमण के समय अनेक रेल स्टेशनों पर फौजी जवानों के लिए चाय एवं भोजन की व्यवस्था की। सरस्वती ताई आप्टे इन सब कार्यों की सूत्रधार थीं। उन्होंने संगठन की लाखों सेविकाओं को यह सिखाया कि गृहस्थी के साथ भी देशसेवा कैसे की जा सकती है। 1909 में जन्मी ताई आप्टे ने सक्रिय जीवन बिताते हुए नौ मार्च, 1994 को प्रातः 4.30 बजे अन्तिम साँस ली।

अमलकी एकादशी

आमलकी एकादशी : व्रत विधि आरती एवं प्रामाणिक व्रत कथा

एक हजार गौ दान का फल देती हैं आमलकी एकादशी, अथ फाल्गुन शुक्ल एकादशी व्रत कथा। मांधाता बोले कि हे वशिष्ठजी ! यदि आप मुझ पर कृपा करें तो किसी ऐसे व्रत की कथा कहिए जिससे मेरा कल्याण हो। महर्षि वशिष्ठ बोले कि हे राजन्, सब व्रतों से उत्तम और अंत में मोक्ष देने वाले आमलकी एकादशी के व्रत का मैं वर्णन करता हूं। यह एकादशी फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष में होती है। इस व्रत के करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत का फल एक हजार गौदान के फल के बराबर होता है। अब मैं आपसे एक पौराणिक कथा कहता हूं, आप ध्यानपूर्वक सुनिए। एक वैदिश नाम का नगर था जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्ण आनंद सहित रहते थे। उस नगर में सदैव वेद ध्वनि गूंजा करती थी तथा पापी, दुराचारी तथा नास्तिक उस नगर में कोई नहीं था। उस नगर में चैतरथ नाम का चन्द्रवंशी राजा राज्य करता था। वह अत्यंत विद्वान तथा धर्मी था। उस नगर में कोई भी व्यक्ति दरिद्र व कंजूस नहीं था। सभी नगरवासी विष्णु भक्त थे और आबाल-वृद्ध स्त्री-पुरुष एकादशी का व्रत किया करते थे। कैसे करें आमलकी एकादशी पर व्रत-पूजन, जानें 8 काम की बातें एक समय फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की आमलकी एकादशी आई। उस दिन राजा, प्रजा तथा बाल-वृद्ध सबने हर्षपूर्वक व्रत किया। राजा अपनी प्रजा के साथ मंदिर में जाकर पूर्ण कुंभ स्थापित करके धूप, दीप, नैवेद्य, पंचरत्न आदि से धात्री (आंवले) का पूजन करने लगे और इस प्रकार स्तुति करने लगे एकादशी जी की आरती हे धात्री ! तुम ब्रह्मस्वरूप हो, तुम ब्रह्माजी द्वारा उत्पन्न हुए हो और समस्त पापों का नाश करने वाले हो, तुमको नमस्कार है। अब तुम मेरा अर्घ्य स्वीकार करो। तुम श्रीराम चन्द्रजी द्वारा सम्मानित हो, मैं आपकी प्रार्थना करता हूं, अतः आप मेरे समस्त पापों का नाश करो। उस मंदिर में सब ने रात्रि को जागरण किया। रात के समय वहां एक बहेलिया आया, जो अत्यंत पापी और दुराचारी था। वह अपने कुटुम्ब का पालन जीव-हत्या करके किया करता था। भूख और प्यास से अत्यंत व्याकुल वह बहेलिया इस जागरण को देखने के लिए मंदिर के एक कोने में बैठ गया और विष्णु भगवान तथा एकादशी माहात्म्य की कथा सुनने लगा। इस प्रकार अन्य मनुष्यों की भांति उसने भी सारी रात जागकर बिता दी।

प्रातःकाल होते ही सब लोग अपने घर चले गए तो बहेलिया भी अपने घर चला गया। घर जाकर उसने भोजन किया। कुछ समय बीतने के पश्चात उस बहेलिए की मृत्यु हो गई, मगर उस आमलकी एकादशी के व्रत तथा जागरण से उसने राजा विदूरथ के घर जन्म लिया और उसका नाम वसुरथ रखा गया। युवा होने पर वह चतुरंगिनी सेना के सहित तथा धन-धान्य से युक्त होकर 10 हजार ग्रामों का पालन करने लगा। वह तेज में सूर्य के समान, कांति में चन्द्रमा के समान, वीरता में भगवान विष्णु के समान और क्षमा में पृथ्वी के समान था। वह अत्यंत धार्मिक, सत्यवादी, कर्मवीर और विष्णु भक्त था। वह प्रजा का समान भाव से पालन करता था। दान देना उसका नित्य कर्तव्य था। एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए गया। दैवयोग से वह मार्ग भूल गया और दिशा ज्ञान न रहने के कारण उसी वन में एक वृक्ष के नीचे सो गया। थोड़ी देर बाद पहाड़ी म्लेच्छ वहां पर आ गए और राजा को अकेला देखकर 'मारो, मारो' शब्द करते हुए राजा की ओर दौड़े। म्लेच्छ कहने लगे कि इसी दुष्ट राजा ने हमारे माता, पिता, पुत्र, पौत्र आदि अनेक संबंधियों को मारा है तथा देश से निकाल दिया है अतः इसको अवश्य मारना चाहिए। ऐसा कहकर वे म्लेच्छ उस राजा को मारने दौड़े और अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र उसके ऊपर फेंके। वे सब अस्त्र-शस्त्र राजा के शरीर पर गिरते ही नष्ट हो जाते और उनका वार पुष्प के समान प्रतीत होता। अब उन म्लेच्छों के अस्त्र-शस्त्र उलटा उन्हीं पर प्रहार करने लगे जिससे वे मूर्छित होकर गिरने लगे। उसी समय राजा के शरीर से एक दिव्य स्त्री उत्पन्न हुई। वह स्त्री अत्यंत सुंदर होते हुए भी उसकी भृकुटी टेढ़ी थी, उसकी आंखों से लाल-लाल अग्नि निकल रही थी जिससे वह दूसरे काल के समान प्रतीत होती थी। वह स्त्री म्लेच्छों को मारने दौड़ी और थोड़ी ही देर में उसने सब म्लेच्छों को काल के गाल में पहुंचा दिया। जब राजा सोकर उठा तो उसने म्लेच्छों को मरा हुआ देखकर कहा कि इन शत्रुओं को किसने मारा है ? इस वन में मेरा कौन हितैषी रहता है ? वह ऐसा विचार कर ही रहा था कि आकाशवाणी हुई- 'हे राजा ! इस संसार में विष्णु भगवान के अतिरिक्त कौन तेरी सहायता कर सकता है।' इस आकाशवाणी को सुनकर राजा अपने राज्य में आ गया और सुखपूर्वक राज्य करने लगा। महर्षि वशिष्ठ बोले कि हे राजन्! यह आमलकी एकादशी के व्रत का प्रभाव था। जो मनुष्य इस आमलकी एकादशी का व्रत करते हैं, वे प्रत्येक कार्य में सफल होते हैं और अंत में विष्णुलोक को जाते हैं।

आमलकी एकादशी के दिन शिवलिंग पर आंवले का रस चढ़ाने से कई फ़ायदे मिलते हैं, जैसे किः आयुर्वेद + ज्योतिष + सनातन

1. लंबी उम्र का वरदान मिलता है,
2. तरक्की के रास्ते खुलते हैं
3. करियर की मुसीबतें दूर होती हैं,
4. साधक को भगवान शिव की कृपा मिलती है,

आमलकी एकादशी के दिन यह उपाय भी किए जा सकते हैंः

1. भगवान विष्णु को आंवले का भोग लगाना चाहिए,
2. भगवान विष्णु के मंत्र 'ओम दामोदराय नमः' का जाप करना चाहिए,
3. शिवलिंग पर आंवले के पत्ते चढ़ाने चाहिए,
4. आंवले के पेड़ की पूजा करनी चाहिए,
5. आंवले का सेवन करना चाहिए,
6. आंवले के चूर्ण का नियमित सेवन करना चाहिए,
7. पानी में आंवले का रस मिलाकर स्नान करना चाहिए,
8. जरूरतमंद लोगों को भोजन कराना चाहिए,
9. भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी का विशेष अभिषेक करना चाहिए,
10. बाल गोपाल को माखन-मिश्री और तुलसी चढ़ाना चाहिए,

आंवले को धर्म और आयुर्वेद में बहुत महत्वपूर्ण माना गया है. मान्यता है कि भगवान विष्णु ने आंवले के पेड़ की उत्पत्ति की थी।

भौम प्रदोष व्रत

प्रदोष व्रत भगवान शिव और मां पार्वती की कृपा प्राप्त करने के लिए शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दिन पूजा करने से साधक को महादेव का आशीर्वाद मिलता है। साथ ही रुके हुए का जल्द पूरे होते हैं। अगर आप भी भगवान शिव और मां पार्वती को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो प्रदोष व्रत के दिन शुभ मुहूर्त में महादेव की पूजा करें और नियम का पालन करें। इससे साधक को पूजा का पूरा फल मिलेगा। इस बार मार्च के पहले प्रदोष व्रत की डेट को लेकर लोगों में असमंजस की स्थिति बन रही है। प्रदोष व्रत की तिथि और शुभ मुहूर्त वैदिक पंचांग के अनुसार, फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि की शुरुआत 11 मार्च को सुबह 08 बजकर 13 मिनट पर होगी और अगले दिन यानी 12 मार्च को सुबह 09 बजकर 11 मिनट पर तिथि का समापन होगा। इस प्रकार 11 मार्च को प्रदोष व्रत किया जाएगा। प्रदोष व्रत के दिन महादेव की पूजा संध्याकाल में होती है। इस दिन पूजा करना का शुभ मुहूर्त शाम को 06 बजकर 27 मिनट से 08 बजकर 53 मिनट तक है।

प्रदोष व्रत की पूजा विधि प्रदोष व्रत के दिन सुबह जल्दी उठकर दिन की शुरुआत महादेव के ध्यान से करें। इसके बाद स्नान करने के बाद सूर्य देव को अर्घ्य दें। इसके बाद शिवलिंग का अभिषेक करें। महादेव का चंदन, भस्म आदि से तिलक करें। देसी घी का दीपक जलाकर आरती करें और महादेव के मंत्रों का जप करें। इसके बाद खीर, दही और फिर सूजी के हलवे समेत आदि चीजों का भोग लगाएं। आखिरी में लोगों में प्रसाद बाटें और खुद भी ग्रहण करें।

शिक्षा "मूलभूत अधिकार" के भयानक व्यवसायीकरण का सच, इसका उपचार आवश्यक है

क्या आप जानते है कि, हमारे देश में तेजी से शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता सुधार हेतु कार्यरत अधिकारी एवं विभाग गहरी नींद में मस्त है। समाज में जिस तरह तेजी से शिक्षा के व्यवसायीकरण हो रहा है उससे कई गंभीर नुकसान हो रहा है जो समाज और विद्यार्थियों दोनों को प्रभावित करते हैं। आइए कुछ मुख्य बिंदुओं पर नजर डालते हैं।

1. शिक्षा का महंगा होनाः शिक्षा एक मौलिक अधिकार है, लेकिन जब इसे व्यवसाय बना दिया जाता है, तो यह केवल अमीर वर्ग के लिए सुलभ हो जाती है। गरीब और मध्यम वर्ग के लोग अच्छी शिक्षा से वंचित रह सकते हैं।

2. गुणवत्ता पर असरः कई बार निजी संस्थान सिर्फ लाभ कमाने के लिए शिक्षा देते हैं, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता गिर सकती है। शिक्षक चयन और पाठ्यक्रम पर ध्यान देने के बजाय संस्थान मुनाफे पर केंद्रित हो जाते हैं।

3. मूल्यों का ह्रासः व्यवसायीकरण के कारण शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान और चरित्र निर्माण से हटकर केवल डिग्री और नौकरी पाना बन जाता है। इससे नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना कम हो सकती है।

4. योग्यता के बजाय पैसे का बोलबालाः महंगी फीस और डोनेशन सिस्टम के कारण कई बार योग्य लेकिन गरीब विद्यार्थी पीछे रह जाते हैं, जबकि आर्थिक रूप से सक्षम लोग आसानी से दाखिला पा लेते हैं।

5. प्रतिस्पर्धा और तनावः निजी संस्थान अपने ब्रांड और रैंकिंग बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों पर अधिक दबाव डालते हैं, जिससे मानसिक तनाव और प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है।

6. शिक्षा का बाजारीकरणः शिक्षा को एक प्रोडक्ट बना दिया जाता है, जहां डिग्रियों को बेचा जाता है और विज्ञापनों के जरिए छात्रों को लुभाया जाता है, बजाय इसके कि असली ज्ञान और सीखने पर ध्यान दिया जाए।

मिथ है कि स्त्री को समझना तो ईश्वर के बस की बात भी नहीं है तो हम सामान्य जन उसे कैसे समझ सकतें हैं ?

स्त्री बड़ी सरल है, यह सुनना/मानना आज के समाज को पचता नहीं है। लेकिन सच्चाई यही है कि स्त्री बहुत सरल है और उसका एक-एक कृत्य/भाव-भंगिमा खुली किताब की तरह है। लेकिन उस पुस्तक को पढ़ने के लिए, पढ़ा-लिखा होना अनिवार्य नहीं है, उसके लिए हृदयवान होना काफी है। स्त्री बाहर से अपने प्रेम का प्रचार नहीं करती, लेकिन उसकी रस-विभोर मुस्कुराती आंखें सब कुछ उजागर कर देतीं हैं, जिसे देखने के लिए मात्र अनालोचक दृष्टि आवश्यक है। वह स्वयं नियमों में जीती है और पूरे घर-परिवार के नियमों को इतना आत्मसात कर लेती है कि उसका स्वयं का अलग व्यक्तित्व ही नहीं बचता। यूं तो नारी को सदा ही नियमों/बंदिशों/मर्यादा की लक्ष्मणरेखा में रखा गया है तथापि वह स्वयं बंधनों में लीन होने की क्षमता रखती है। वह स्वयंसिद्ध अनुशासन में जीती भी है और धीरे-धीरे पति/परिवार/बच्चों में भी अनुशासन लाने की क्षमता रखती है। जब कोई स्त्री गुस्से/क्रोध में होती है, तो वह जो कुछ भी कहती है, उस शब्दों/बातों का आधा भी मतलब नहीं होता। वास्तव में वह कहीं भीतर प्रेम की कमी अनुभव कर रही होती है। यदि संभव हो तो उसे शांत करने के लिए उसे गले लगा लें तो उसका क्रोध विसर्जित/विलीन हो जाता है। किसी स्त्री के लिए सबसे कठिन समय तब होता है जब वह उस आदमी से दूर होती है जिसे वह प्यार करती है। वह परेशान/व्याकुल/बेचैन हो जाती है। ध्यान रहे कि एक स्त्री को पुरुष पर भरोसा करने में समय लगता है, लेकिन जब उसे भरोसा आता है तो उसके लिए वह समस्त संसार से लड़ जाती है। लेकिन जब उसके भरोसे को चोट पहुंचती है तो हिंसक भी हो जाती है। स्त्री शायद ही कभी चीजों को भूलती है, उसे चोट

पहुँचाने से बचें। नकारात्मक शब्दों से बचें। स्त्रियां नमक की भांति होती हैं, सामान्यतः घर-परिवार में उनकी उपस्थिति पर ध्यान नहीं दिया जाता, लेकिन उनकी अनुपस्थिति परिवार के लिए समस्त चीजों को बेस्वाद बना देती है। स्त्रियां बहुत गुप्त होती हैं, जब उनको कोई बात चोट पहुंचाती है तो वह चुप/एकांत में चलीं जातीं हैं। रोतीं हैं क्युंकि वह हृदय से जीतीं हैं। वह मालिक नहीं, पति में अपना मित्र तलाशती हैं। वह हृदय से सबकी हर मांग पूरी करना चाहतीं हैं, लेकिन उसे जबरदस्ती 'प्रेम का अधिकार' स्वीकार नहीं होता। यदि कोई स्त्री आपसे सच्चा प्यार करती है, तो आपसे पैसे माँगने में भी वह शर्माएगी, लेकिन एक सज्जन व्यक्ति के तौर पर उसके कुछ मांगने का इंतज़ार न करें। ध्यान रहे कि यदि आपकी ज़िंदगी में कोई अच्छी स्त्री है, तो उसे कभी भी हल्के में न लें। वह किसी महंगे गहने के समान हैं, उसे आपकी सुरक्षा और संभाल की आवश्यकता है। उन्हें कभी दुखी न करें क्योंकि ऐसे बहुत से लोग हैं जो उसके जैसी स्त्री की चाहत में आज भी हैं।

होली से पहले बाजारों में बढ़ी रौनक, प्राकृतिक रंगों की बढ़ी मांग; प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री पिचकारी की बिक्री तेज

परिवहन विशेष न्यूज

होली का त्योहार नजदीक आते ही बाजारों में चहल–पहल बढ़ गई है। लोग गुलाल रंग–बिरंगे रंगों और पिचकारियों की खरीदारी के लिए घरों से निकल रहे हैं। इस बार बाजारों में केमिकल युक्त रंगों की तुलना में प्राकृतिक गुलाल को लोग ज्यादा पसंद कर रहे हैं। बाजार में पीएम मोदी और सीएम पिचकारी की भी खूब बिक्री हो रही है।

नई दिल्ली। होली का त्योहार नजदीक आ रहा है और इसके साथ ही बाजारों में चहल-पहल भी बढ़ गई है। बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक यह पर्व लोगों में खास उत्साह भर रहा है। जैसे-जैसे होली करीब आ रही है, वैसे-वैसे बाजारों में रौनक बढ़ रही है।

दिल्ली के चांदनी चौक, सदर बाजार और करोल बाग जैसे प्रमुख बाजारों में खरीदारों की भीड़ उमड़ रही है। लोग गुलाल और रंग-बिरंगे रंगों की खरीदारी के लिए निकल रहे हैं, जिससे दुकानदारों के चेहरे खुशी से खिल उठे हैं। खासकर बच्चे तरह-तरह की पिचकारियों को देखकर उत्साहित नजर आ रहे हैं।

बाजार में गुलाल की हो रही अधिक बिक्री

इस बार होली खास रहने वाली है, क्योंकि बाजारों में केमिकल युक्त रंगों की तुलना में प्राकृतिक गुलाल को लोग ज्यादा पसंद कर रहे हैं। ये रंग न केवल त्वचा के लिए सुरक्षित हैं, बल्कि आसानी से हट भी जाते हैं।

सदर बाजार के स्थानीय दुकानदार ने बताया कि ग्राहक इस बार पक्के रंग की तुलना में प्राकृतिक रंगों को ज्यादा पसंद कर रहे। खासकर अपने बच्चे की त्वचा को ध्यान में रखकर माता-पिता रंग खरीद रहे है।

पीएम मोदी और सीएम पिचकारी की बिक्री बढ़ी

बाजार में इस बार नेताओं और अभिनेताओं के नाम वाली पिचकारियां आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। खासतौर पर पीएम मोदी पिचकारी सबसे अधिक पसंद की जा रही है जबकि सीएम पिचकारी भी खूब बिक रही है। इसके अलावा रंग-बिरंगे मास्क और कृत्रिम बाल भी लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।

बाजार में महिलाएं कर रहीं जमकर खरीददारी

घरों में महिलाएं भी इस पर्व को खास बनाने के लिए उत्साहित हैं। वे परिवार के लिए स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करने के लिए जरूरी सामान की खरीदारी कर रही हैं। बाजारों की रौनक और लोगों का उत्साह इस बात का संकेत है कि इस बार होली पहले से भी अधिक जोश और उल्लास के साथ मनाई जाएगी।

हे परवरदिगार करों हमला 'वृत्ति' पर!

सीरिया के नए 'शासनकाल' में गोली,
जारी हिंसा 'मानवता' ने खेली होली।
यह इतनी हैं भयानक ढा रहीं कयामत,
आम इंसान डर रहे कैसे रहें सलामत।
पुरुष श्वानों की तरह घुटनों चल रहें,
महिलाओं की भी हत्याओं से डर रहें।

सीरिया के नए 'शासनकाल' में गोली,
जारी हिंसा 'मानवता' ने खेली होली।
'मौत' तो 'नाच' रही हो गई है हज़ार,
'तांडव' इतना गहरा है न बनें मज़ार।
सरकार का समर्थन करते बंदूकधारी,
ना जाने किस–किसकी आ रही बारी।

सीरिया के नए 'शासनकाल' में गोली,
जारी हिंसा 'मानवता' ने खेली होली।
द्रुढ़ अलावित अल्पसंख्यक समुदाय,
जान बचाने के लिए करते हाय–हाय।
सड़क पे करते महिलाओं को निर्वस्त्र,
ये इंसानियत के दरिन्दों का है शस्त्र।

सीरिया के नए 'शासनकाल' में गोली,
जारी हिंसा 'मानवता' ने खेली होली।
कई घर पूरी तरह जलाकर हुए ख़ाक,
मल रहे उग्रवादी अपने माथे पर राख़।
बिछी हुई लाशें इमारतों की छतों पर,
हे परवरदिगार करों हमला 'वृत्ति' पर!
नापाक हो इनके इरादें पावन धरा पर।
(संदर्भ: सीरिया में हो रही हिंसक घटनाएँ)

संजय एम तराणेकर

रोज हत्या, लूट व चोरी की वारदातें हो रहीं हैं- कुलदीप

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली में भाजपा की डबल इंजन की सरकार लोगों के लिए विपदा बन गई है। दिल्ली में कानून- व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है और सरेआम लोगों की हत्याएं हो रही हैं। गाजीपुर इलाके में सोमवार को सुबह 5 बजे सड़क पर एक युवक की गोली मारकर हत्या की वारदात ने साबित कर दिया है कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा दिल्ली की सीएम और पुलिस के साथ संयुक्त बैठक करने के बाद भी अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और उनमें कोई खौंफ नहीं है। भाजपा की डबल इंजन की सरकार आने के बावजूद लोग खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। रोज हत्या, लूट व चोरी की वारदातें हो रहीं हैं। लेकिन सीएम रेखा गुप्ता समेत पूरी भाजपा इस पर मौन है और इनका ध्यान केवल अरविंद केजरीवाल को गाली देने में है।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और कोंडली विधानसभा से विधायक कुलदीप कुमार ने सोमवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता कर यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही दुखद बात है कि दिल्ली में भाजपा की डबल इंजन की सरकार आने के बावजूद अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। जबकि देश के गृहमंत्री अमित शाह दिल्ली की कानून-व्यवस्था को लेकर मुख्यमंत्री और दिल्ली पुलिस के साथ संयुक्त बैठक भी कर चुके हैं। भाजपा की डबल इंजन की सरकार में दिल्ली की कानून व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है और दिल्ली की जनता खुद को असुरक्षित महसूस कर रही है।

कुलदीप कुमार ने कहा कि पूर्वी दिल्ली के गाजीपुर में सोमवार को सुबह पांच बजे सड़क पर सरेआम एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। भाजपा की डबल इंजन की सरकार में अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि वो दिन-दहाड़े गोली मारकर लोगों की हत्या कर रहे हैं। बढ़ते अपराधों को लेकर भाजपा की डबल इंजन की सरकार और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पूरी तरह से मौन है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता दिल्ली के लोगों को सुरक्षा देने में असमर्थ साबित हो रही हैं। भाजपा की डबल इंजन की सरकार लोगों को अच्छी कानून-व्यवस्था नहीं दे पा रही है। दिल्ली में रोज हत्या, लूट, चोरी की वारदातें हो रही हैं। भाजपा की सरकार और दिल्ली पुलिस ने राष्ट्रीय राजधानी में कानून व्यवस्था का माहौल खराब करने काम किया है।

कुलदीप कुमार ने भाजपा से पूछा कि दिल्ली में डबल इंजन की सरकार क्या काम कर रही है। आखिर दिल्ली के लोगों को सुरक्षा व्यवस्था कैसे मिलेगी? सोमवार सुबह गाजीपुर इलाके में हुई युवक ही हत्या की घटना के बाद से पूरे इलाके में तनाव और भाजपा के खिलाफ आक्रोश है। सरेआम युवक की हत्या कर दी जाती है और भाजपा की डबल इंजन की सरकार हाथ पर हाथ रख कर बैठी है और उसका दिल्ली की कानून-व्यवस्था के उपर कोई ध्यान नहीं है। भाजपा का ध्यान केवल अरविंद केजरीवाल को गाली देने में हैं।

फेडरेशन ऑफ नरेला द्वारा होली मिलन समारोह में सामाजिक संगठनों व पत्रकारों को किया गया सम्मानित

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

बाहरी दिल्ली के नरेला में फेडरेशन ऑफ नरेला सब सिटी द्वारा श्री दयानंद खत्री कुटीर, नरेला में 9 मार्च को फूलों की होली का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में नरेला के सैकड़ो लोग मौजूद रहें। कार्यक्रम को आयोजित करने के पीछे फेडरेशन ऑफ नरेला संस्था का मकसद है कि केमिकल वाले रंगों से होली के दौरान लोगों की त्वचा खराब हो जाती है। इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को फूलों की होली खेलने के लिए प्रेरित किया गया। प्रत्येक वर्ष फेडरेशन ऑफ नरेला फूलों की होली का आयोजन पिछले कई वर्षों से करता आ रहा है। इस मौके पर नरेला क्षेत्र से लोकप्रिय विधायक राजकरण खत्री मुख्य अतिथि के रूप में शामिल रहे। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि फेडरेशन ऑफ नरेला पिछले कई वर्षों से सामाजिक विकास के लिए काम कर रही है। फेडरेशन के माध्यम से इलाके में विकास कार्यों को गति मिले इसके लिए उनको अनेक प्रकार के सुझाव दिए जा रहे हैं। फेडरेशन के सुझाव को मानते हुए विधायक राजकरण खत्री ने कहा कि नरेला में ट्रैफिक जाम की समस्या बहुत बढ़ गई है इसलिए इलाके में बाई पास का निर्माण जल्दी करवाने का प्रयास किया जा रहा है। इस मौके पर एसीपी अक्षय कुमार, वकील तरुण शौकीन, जोगिंदर राणा, नवीन शर्मा, प्रमुख समाजसेवी DP. गोयल जी रहें सभी अतिथियों ने जनता को संबोधन करते हुए फेडरेशन की प्रशंसा की और होली का महत्व समझाया और सभी को अपनी ओर से बधाई दी।

फेडरेशन के अध्यक्ष श्री जोगिंदर दहिया ने बताया कि उनकी संस्था पिछले 15 सालों से फूलों की होली का आयोजन करती आ रही हैं। इसके अलावा उन्होंने कहा कि होली के इस अवसर पर हम तमाम सामाजिक संगठनों व पत्रकारों को सम्मानित करते हैं ताकि उनके योगदान को समाज के बीच में लेकर जाया जा सकें।

इसके अलावा आपस में भाईचारा कायम करने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहे और फेडरेशन की तरफ से सभी को होली की ढेर सारी बधाइयां।

सुप्रीम कोर्ट की वकील साहिबा नवीन चौधरी जी ने अपने संबोधन में कहा कि होली पर सभी रंगों का त्यौहार सभी मिलकर एक दूसरे से गिला शिकवा दूर करते गले लगाते हुए और भाईचारे के साथ मनाया जाता हैं।

एडवोकेट तरुण शौकीन बताया यह त्यौहार हम सभी को एक साथ जोड़ने के लिए मनाया जाता है। इस त्यौहार पर लोग शराब पीकर गाड़ी चलाते हैं या लड़ाई झगड़ा करते हैं हमें ऐसा नहीं करना चाहिए हमें अपने त्यौहार को अपने परिवार के साथ बैठकर मानना चाहिए।

समाजसेवी डी,पी गोयल का कहना है इस समय भारतवर्ष में आम आदमी समाज से कटता जा रहा है। यह हम सभी के लिए अच्छा संदेश नहीं है इसीलिए सभी गिले शिकवे भुला कर एक दूसरे को गले लगाना चाहिए। इस मौके पर आए हुए क्षेत्र के लोगों व कार्यक्रम में आए सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियो में महासचिव नरेंद्र कुमार जी, उपाध्यक्ष धीरज खत्री, रंजीत पांडे, राजकुमार अरोड़ा, नरेश सैनी, सरोज वशिष्ठ, कमलेश तुषीर, उषा कश्यप, सुमन, बिन्नी, मोनिका के साथ फेडरेशन ऑफ नरेला के सभी पदाधिकारी सदस्य गण और क्षेत्र की जनता मौजूद रहीं।

संसद में लोकहित के मुद्दों पर चर्चा कराने से भाग रही मोदी सरकार, विपक्ष ने सदन का किया वहिष्कार- संजय सिंह

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने संसद में लोकहित के मुद्दों पर चर्चा नहीं कराने से भागने पर मोदी सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि सरकार संसद में विभिन्न विषयों पर चर्चा कराने की बजाय भाग रही है। इसलिए सोमवार को हमने सदन का वहिष्कार किया। भाजपा ने चुनाव आयोग को अपनी घरेलू संस्था बना दिया है और उसकी केंद्र व राज्य सरकारें मतदाताओं के वोट कटवाकर अपने फ़र्ज़ी वोट बनवा रही हैं। हमने शेयर मार्केट में लोगों के लाखों करोड़ रुपए डूबने और डिलिमिटेशन में दक्षिण के राज्यों में सीटें कम नहीं करने समेत अन्य मुद्दों पर चर्चा कराने की मांग की, लेकिन सरकार तैयार नहीं हुई। उन्होंने कहा कि मैंने शेयर बाजार में भारी गिरावट से खुदरा निवेशकों को हुए भारी नुकसान और नियामक तंत्र की प्रभावशीलता पर नियम 267 के तहत तत्काल चर्चा के लिए सस्पेंशन ऑफ बिजनेस का नोटिस भी दिया है।

सांसद संजय सिंह ने कहा कि भाजपा ने चुनाव आयोग जैसी संस्था को अपनी घरेलू संस्था बना दिया है। भाजपा की केंद्र और राज्य सरकारों ने सरकारी तंत्र का दुरुपयोग करके चुनावों को प्रभावित कर रही हैं। ऐसा मामला महाराष्ट्र में सामने आ चुका है। महाराष्ट्र में लाखों वोट फर्जी बनाए गए। इसी तरह का मामला हरियाणा में भी सामने आया है। हरियाणा में भी लाखों मतदाताओं का हेर-फेर हुआ है। दिल्ली में वोटरों में हेर-फेर का मामला सामने आया। आम आदमी पार्टी ने चुनाव आयोग से मिलकर इसकी शिकायत भी की कि कैसे भाजपा के लोग वोटरों के वोट कटवा रहे थे और फर्जी वोट जुड़वा रहे थे, लोगों के वोट शिफ्ट करा रहे थे।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में एक और घोटाला हुआ है। बवाना से जो आम आदमी पार्टी के विधायक थे और इस बार वो चुनाव हार गए। उन्होंने हमें बताया कि बवाना विधानसभा में भारी संख्या में एक बूथ के वोटर दूसरे बूथ पर शिफ्ट कर दिए गए। चुनाव में हराने का भाजपा का यह भी एक अच्छा तरीका है। मतदाता अपने बूथ पर वोट करने के लिए पहुंचेगा और पता चलेगा कि वहां तो उसका वोट ही नहीं है। पंश्चिम बंगाल में एक ही मतदाता फोटो पहचान पत्र (ईपीआईसी) का मामला आया है। अगर देश के अंदर चुनाव ही निष्पक्ष नहीं होंगे तो आम लोग संसद के अंदर कैसे पहुंचेंगे? भाजपा से जुड़े लोग ही इस चुनावी घोटाले की प्रक्रिया जीत कर संसद और विधानसभा में पहुंच पाएंगे। इसलिए विपक्ष ने सरकार से सदन में इस विषय पर चर्चा कराने की मांग की, लेकिन सरकार भाग गई।

संजय सिंह ने कहा कि सदन में पिछले पांच महीने में भारतीय शेयर मार्केट में निवेशकों के 94 लाख करोड़ रुपए डूब गए। मैंने सदन में इस मुद्दे पर चर्चा कराने की मांग की, लेकिन सरकार भाग गई। इसके बाद हमने मुद्दा उठाया कि डी-लिमिटेशन में दक्षिण के राज्यों के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए, उनकी सीटें कम नहीं होनी चाहिए। इस पर भी सरकार कुछ बोलने के लिए तैयार नहीं है। आज भारत के एकजुट होने के पीछे सबसे बड़ी वजह यह है कि हम विविधता में एकता वाले देश हैं। भारत का लोकतंत्र संघीय ढांचे में विश्वास करता है। किसी राज्य का अधिकार छीनना ठीक नहीं है। इन सभी मुद्दों को लेकर विपक्ष ने सदन का वहिष्कार किया। हमारा यह विरोध आगे भी जारी रहेगा।

उन्होंने कहा है कि इस संदर्भ में यह अनिवार्य हो जाता है कि हम भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) समेत अन्य संबंधित नियामक निकायों की कार्यप्रणाली एवं प्रभावशीलता की गहन समीक्षा करें। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इन निकायों द्वारा बाजार में होने वाले हेर-फेर, अत्यधिक सट्टेबाजी समेत अन्य अनियमित गतिविधियों को रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाए गए हैं या नहीं। साथ ही. निवेशकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी नीतियों का क्रियान्वयन कितना कारगर रहा है, इसका भी आकलन आवश्यक है।

संजय सिंह अंत में सभापति से अनुरोध करते हुए कहा है कि नियम 267 के तहत इस गंभीर मुद्दे पर सदन में विस्तृत चर्चा कराई जाए, ताकि सरकार इस संकट के प्रभावों को कम करने और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए आवश्यक कदम उठा सके।

भारतीय समाज में मासिक धर्म अभी तक कलंकित क्यों?

भारत के पास मासिक धर्म स्वास्थ्य के प्रति अधिक समावेशी और दूरदर्शी दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हुए सांस्कृतिक विचारों का सम्मान करने का अवसर है। आपके क्या विचार हैं– क्या सरकार को इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए, या जमीनी स्तर के संगठनों को बदलाव लाने में आगे आना चाहिए? मासिक धर्म से जुड़ा कलंक कई संस्कृतियों में मौजूद है, जो सांस्कृतिक वर्जनाओं, ग़लत सूचनाओं और प्रणालीगत लैंगिक असमानता से प्रेरित है। इसके परिणामस्वरूप गंभीर मुद्दे सामने आते हैं, जैसे मासिक धर्म उत्पादों तक सीमित पहुँच, अपर्याप्त शिक्षा और यहाँ तक कि कुछ समुदायों में सामाजिक बहिष्कार। इस कलंक को ख़त्म करने के लिए, हमें खुली चर्चाओं को प्रोत्साहित करने, मासिक धर्म के बारे में पूरी तरह से शिक्षा प्रदान करने और मासिक धर्म समानता को बढ़ावा देने वाले नीतिगत बदलावों को लागू करने की आवश्यकता है।

-प्रियंका सौरभ

मासिक धर्म कई संस्कृतियों में एक वर्जित विषय बना हुआ है, जिसका मुख्य कारण लंबे समय से चली आ रही सांस्कृतिक मान्यताएँ, अपर्याप्त खुली बातचीत और लैंगिक असमानता है। इसके परिणामस्वरूप शर्म, गोपनीयता और मासिक धर्म स्वास्थ्य के बारे में आवश्यक संसाधनों और शिक्षा तक सीमित पहुँच की भावनाएँ पैदा होती हैं। भारत में, मासिक धर्म को अक्सर महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक वर्जनाओं से जोड़ा जाता है, जिससे बहिष्कार, ग़लत सूचना और प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभाव हो सकते हैं। हालाँकि प्रगतिशील नीतियाँ पेश की जा रही हैं, लेकिन सफल कार्यान्वयन के लिए इन्हें सांस्कृतिक संवेदनशीलताओं के साथ जोड़ना महत्त्वपूर्ण है।

महिलाओं को अक्सर मंदिरों, रसोई और सामाजिक समारोहों जैसी जगहों पर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है, जो भेदभाव को बढ़ावा देता है। २०18 में सुप्रीम कोर्ट के सबरीमाला फैसले ने मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध को हटा दिया, लेकिन इसे सांस्कृतिक मान्यताओं में निहित काफ़ी विरोध का सामना करना पड़ा। मासिक धर्म के बारे में खुली चर्चा की कमी स्वास्थ्य मामलों में मिथकों और उपेक्षा को बढ़ावा देती है। ग्रामीण भारत में केवल 58% युवा लड़कियों को अपने पहले मासिक धर्म का अनुभव करने से पहले मासिक धर्म के बारे में जानती है। शौचालय, स्वच्छता उत्पादों और उचित निपटान विधियों तक अपर्याप्त पहुँच से भी जूझती हैं। जबकि २014 में शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान ने स्वच्छता में प्रगति की है, मासिक धर्म अपशिष्ट निपटान एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है। स्वच्छता उत्पादों की उच्च लागत कई लोगों को असुरक्षित विकल्पों का सहारा लेने के लिए मजबूर करती है। २०२२ में शुरू की गई राजस्थान नि:शुल्क सैनिटरी पैड योजना का उद्देश्य मासिक धर्म ग़रीबी से निपटने के लिए नि:शुल्क पैड उपलब्ध कराना है। हालाँकि, राजनीतिक एजेंडों में मासिक धर्म स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं दी जाती है, जो व्यापक सुधारों में बाधा डालता है। मासिक धर्म स्वच्छता नीति (ड्राफ्ट २०२२) को अभी भी पूरे देश में पूरी तरह से लागू किया जाना बाक़ी है।

मासिक धर्म के बारे में जागरूकता को राज्य के पाठ्यक्रमों में शामिल करने से इस विषय पर बातचीत को सामान्य बनाने में मदद मिल सकती है। मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन दिशानिर्देश प्राथमिक विद्यालय स्तर से मासिक धर्म शिक्षा की वकालत करते हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और सामुदायिक नेताओं को प्रशिक्षित करके, हम अधिक स्वीकृति को बढ़ावा दे सकते हैं। मासिक धर्म स्वास्थ्य गठबंधन भारत (२०२०) जागरूकता बढ़ाने के लिए जमीनी स्तर के संगठनों के साथ सहयोग करता है। सार्वजनिक हस्तियाँ और मीडिया सकारात्मक संदेश के माध्यम से कलंक का मुकाबला करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। "चुप्पी तोड़ो" अभियान (२०२1, यूनिसेफ इंडिया) ने जागरूकता फैलाने के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का प्रभावी ढंग से उपयोग किया। मासिक धर्म स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए, स्कूलों और कार्यस्थलों में निपटान विकल्पों के साथ अधिक लिंग-अनुकूल शौचालयों सहित (जल, स्वच्छता और स्वच्छता) सुविधाओं को सुनिश्चित करना आवश्यक है। मासिक धर्म उत्पादों पर सरकारी सब्सिडी और जीएसटी छूट से पहुँच में काफ़ी सुधार हो सकता है। २018 में सैनिटरी पैड पर 12% जीएसटी हटाने से वे अधिक किफ़ायती हो गए। बायोडिग्रेडेबल पैड और मासिक धर्म कप को बढ़ावा देना पर्यावरण और सांस्कृतिक दोनों चिंताओं को सम्बोधित करता है। सखी सैनिटरी नैपकिन पहल (ओडिशा, २०२1) बायोडिग्रेडेबल पैड के स्थानीय उत्पादन का समर्थन करती है।

मासिक धर्म स्वास्थ्य को स्वास्थ्य के अधिकार (अनुच्छेद २1) के तहत मान्यता दी जानी चाहिए और श्रम कानूनों में शामिल किया जाना चाहिए। मासिक धर्म लाभ विधेयक (२018, निजी सदस्य विधेयक) ने मासिक धर्म अवकाश का भुगतान करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन इसे सरकारी समर्थन नहीं मिला। कंपनियों को मासिक धर्म अवकाश का भुगतान करना चाहिए और कार्यस्थल स्वच्छता सहायता सुनिश्चित करनी चाहिए। ज़ोमैटो ने २०२० में मासिक धर्म अवकाश की शुरुआत करके निजी क्षेत्र में एक मिसाल क़ायम की। सैनिटरी उत्पाद निर्माताओं के लिए विस्तारित निर्माता जिम्मेदारी मानदंडों को लागू करने से कचरे में कमी लाने में मदद मिल सकती है। मासिक धर्म के बारे में बातचीत को बदलने के लिए स्थानीय नेताओं, बुज़ुर्गों और धार्मिक हस्तियों को शामिल करने वाली समुदाय-आधारित पहल विकसित करें। मासिक धर्म स्वास्थ्य के बारे में चर्चा को और अधिक सामान्य बनाने के लिए शैक्षिक सेटिंग्स और मीडिया में सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त संदेश का उपयोग करें। अधिक समावेशी संवाद बनाने के लिए जागरूकता प्रयासों में पुरुषों और लड़कों को शामिल करें। सैनिटरी उत्पादों पर करों को समाप्त करके और यह सुनिश्चित करके मासिक धर्म स्वास्थ्य नीतियों को बढ़ावा दें कि वे स्कूलों, कार्यस्थलों और ग्रामीण समुदायों में आसानी से उपलब्ध हों।

कार्यस्थल की नीतियों को लागू करें जो मासिक धर्म वाले व्यक्तियों को समायोजित करती हैं, जैसे कि मासिक धर्म अवकाश और स्वच्छ शौचालय तक पहुँच प्रदान करना। सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान करने वाले तरीके से स्कूली कार्यक्रमों में मासिक धर्म शिक्षा को शामिल करें। राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम जैसे सरकारी प्रयासों को व्यापक बनाएँ, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में मुफ्त या रियायती सैनिटरी पैड प्रदान करें। पर्यावरण और वित्तीय पहलुओं पर विचार करते हुए, पुन: प्रयोज्य कपड़े के पैड और मासिक धर्म कप जैसे टिकाऊ और लागत प्रभावी मासिक धर्म उत्पादों के उपयोग की वकालत करें। हानिकारक मासिक धर्म मिथकों को दूर करने के लिए बॉलीवुड, सोशल मीडिया प्रभावितों और टेलीविजन शो का उपयोग करें। पैडमैन जैसी फ़िल्मों ने महत्त्वपूर्ण चर्चाओं को जन्म दिया है-इस तरह की और पहल आवश्यक हैं। सांस्कृतिक संदर्भों में सकारात्मक मासिक धर्म संदेशों को बुनने के लिए स्थानीय कहानी और पारंपरिक आख्यानों को प्रोत्साहित करें। मासिक धर्म स्वास्थ्य पर सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील सलाह देने के लिए स्वास्थ्य पेशेवरों को प्रशिक्षण प्रदान करें। मासिक धर्म सम्बंधी विकारों और महिलाओं के स्वास्थ्य पर उनके प्रभावों पर शोध का समर्थन करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि स्वास्थ्य सेवा नीतियाँ इन मुद्दों को सम्बोधित करती हैं।

मासिक धर्म स्वास्थ्य को एक मौलिक मानव अधिकार और एक सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए, न कि एक कलंक। एक व्यापक रणनीति जो शिक्षा, बुनियादी ढांचे में सुधार और कानूनी सुधारों को जोड़ती है, वह गरिमा और समानता को बढ़ावा दे सकती है, जिससे मासिक धर्म महिलाओं के स्वास्थ्य का एक मान्यता प्राप्त और समर्थित पहलू बन सकता है।

बॉलीवुड के मशहूर गायक सोनू निगम ने वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट , गुरुग्राम में बिखेरा अपने सुरों का जादू

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम। बेहतरीन पढ़ाई व बेस्ट प्लेसमेंट से सफलता का परचम लहराने वाले वर्ल्ड कॉलेज ऑफ़ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के प्रांगण में जेनिथ 2025 सेलिब्रिटी नाईट का आयोजन किया गया ।

वर्ल्ड कॉलेज के रजिस्ट्रार युद्धवीर सिंह लांबा ने जानकारी देते हुए बताया कि सेलिब्रिटी नाईट कार्यक्रम में पद्मश्री से सम्मानित बॉलीवुड के मशहूर गायक सोनू निगम ने जेनिथ 2025 सेलिब्रिटी नाईट में अपनी सुरीली आवाज व एक्टिंग के दमदार परफॉर्मेंस का ऐसा जलवा बिखेरा की सभी मंत्रमुग्ध हो गए।

पंडाल में उपस्थित कॉलेज के एम.सी.ए, एम.बी.ए, एम.टेक, बी.टेक, बी.बी.ए , बी.सी.ए और डिप्लोमा इंजीनियरिंग के छात्रों और कॉलेज स्टाफ ने बॉलीवुड सिंगर सोनू निगम के मंच पर पहुंचने पर तालियों से उनका स्वागत किया।

करीब दो घंटे की प्रस्तुति के दौरान पद्मश्री से सम्मानित बॉलीवुड के मशहूर गायक सोनू निगम ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति ने समां बांधा और हर किसी को थिरकने पर मजबूर कर दिया।

वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री कुंवर निशांत सिंह जी ने अपने संबोधन में कहा कि समय-समय पर इस तरह सेलिब्रिटी नाईट के आयोजन में बॉलीवुड के फेमस सिंगर और रैपर जैसे यो यो हनी सिंह, इक्का सिंह, सिंगर बोहेमिया, मोहित चौहान, पंजाबी सुपरस्टार सिंगर गिप्पी ग्रेवाल, बॉलीवुड के लोकप्रिय डीजे अकील, मशहूर पंजाबी सिंगर परमीश वर्मा और बॉलीवुड सिंगर बी प्राक आदि को बुला चुके हैं क्योंकि विद्यार्थियों के सर्वांगिक विकास के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद और मनोरंजन भी जरूरी होता है ।

आपको बता दें कि वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से संबद्ध सर्वश्रेष्ठ कॉलेज है जो अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित बी.टेक के रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मैकेनिकल और ऑटोमेशन इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस और डिजाइन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग आदि और एम.टेक के सिविल में कंप्यूटर एडेड स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा साइंस आदि मार्केट्स और इंडस्ट्री सेक्टर की डिमांड के अनुसार रोजगारयुक्त नए कोर्सेज का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है ।

वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट को टाइम्स इंजीनियरिंग सर्वे द्वारा गुरुग्राम में प्लेसमेंट में नंबर 1 कॉलेज के रूप में स्थान दिया गया है I वर्ल्ड कॉलेज में अनेकों सेक्टर की अग्रणी कंपनियां कैंपस प्लेसमेंट के लिए आती हैं।

वदायू की सभी तहसीलो पर सीतापुर पत्रकार हत्या काण्ड को लेकर आईरा का जवरदस्त विरोध प्रदर्शन

पत्रकार राघवेन्द्र वाजपेयी के हत्यारो को योगी सरकार फांसी दे – जिलाध्यक्ष – ठा वेदपाल सिंह कठेरिया

प्रदेश भर के पत्रकारो मे सीतापुर पत्रकार हत्या काण्ड को लेकर भारी रोष – जिलाप्रभारी – नरेन्द्र सिंह

बदायू - मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। उत्तर प्रदेश में मीडिया ने लोकतंत्र परंपराओं और जनतंत्र की रक्षा के लिए हमेशा शासन एवं प्रशासन का महत्वपूर्ण योगदान दिया है, लंबे समय से हमारे संगठन ऑल इंडिया रिपोर्टर्स एसोसिएशन (आईरा) इकाई उत्तर प्रदेश में पत्रकारों की सुरक्षा एवं सम्मान के लिए मांग कर रहा है, जिस पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अब तक कोई ठोस कदम नही उठाया गया है, आईरा इकाई आपसे (माननीय मुख्यमंत्री जी) से निम्न मांग करती है-01. बीते दिन उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद में दैनिक जागरण के पत्रकार श्री राघवेन्द्र वाजपेई जी की बेखौफ बदममाशों के द्वारा दिन-दहाड़े गोलियां मारकर हत्या कर दी गयी, जिस संबंध में हम मांग करते है कि हत्यारों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाएं, जिससे ऐसी घटना दुबारा न हो।02. मृतक पत्रकार राघवेन्द्र वाजपेई जी के परिजनों को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दस लाख रूपये (10,00000) का मुआवजा प्रदान करें, साथ ही मृतक पत्रकार के परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दें।03. उत्तर प्रदेश में पत्रकारों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए प्रदेश सरकार द्वारा ठोक कदम उठाए जाएं एवं पत्रकार सुरक्षा कानून बनाई जाये।04. पत्रकारों पर फर्जी मुकदमे दर्ज न हो और स्थानीय पत्रकारों को स्थानीय पुलिस प्रशासन का पूर्ण सहयोग मिलना चाहिए।05. उत्तर प्रदेश में पत्रकारों को मानदेय की सुविधा लागू की जाये एवं प्रदेश में मान्यता प्राप्त व गैर मान्यता प्राप्त पत्रकारों को मुफ्त उपचार व परिवहन विभाग की बसों में मुफ्त यात्रा की सुविधा मुहैया कराई जाये।

आईरा जिलाध्यक्ष वदायू ठा वेदपाल सिंह ने कहा कि भष्टाचार का उजागर करने वाले सीतापुर के दैनिक जागरण ईमानदार पत्रकार राघवेन्द्र वाजपेयी की दिन दहाडे निर्मम हत्या हो जाना चौथे स्तम्भ के लिए बहुत वडी क्षति तथा चिता का विषय है योगी सरकार से प्रदेश भर के पत्रकार माग करते है कि दोषियो को तुरन्त फासी देकर पीडित पत्रकार के परिवार को न्याय दिलाये , अगर जल्द न्याय नही मिला तो आईरा प्रदेश भर मे विरोध प्रदर्शन करेगी ।

जिलाप्रभारी आईरा बदायू नरेन्द्र सिंह ने कहा कि अगर चौथा स्तम्भ ही सुरक्षित नही है तो आम जनमानस क्या सुरक्षित रहेगा , सीतापुर पत्रकार हत्या काण्ड ने पूरे मीडिया जगत को हिला दिया , पत्रकारो मे भारी रोष है कि सत्य लिखने पर दिन दहाडे कही भी भष्टाचारी माफिया वदमाश पत्रकारो को मार सकते है , सरकार पत्रकारो की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाये ।

वरिष्ट पत्रकार प्रमोद मिश्रा ने कहा कि पत्रकारिता करना जोखिम का काम हो गया है जिस भ्रष्टाचार खिलाफ के खिलाफ खवर छाप दो तो भष्टाचारी जान के दुश्मन हो जाते है सरकार को पत्रकारो की सुरक्षा के लिए कठोर कानून बनाने चाहिए विसौली मे वकीलो ने भी पत्रकारो की मागो का समर्थन किया।

बदायूं में सदर तहसील मुख्यालय पर संगठन के प्रदेश महासचिव अबरार अहमद के नेतृत्व मुख्यमंत्री को संबोधित पांच सूत्रीय ज्ञापन सौंपा गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार हामिद अली खान राजपूत पश्चिमी उत्तर प्रदेश प्रभारी, सुरेश प्रसाद शर्मा, जिला संरक्षक, राजीव पाल, संरक्षक, केपी यादव जिला कोषाध्यक्ष, नरेंद्र सिंह चौहान, तस्लीम गाज़ी, सत्यम मिश्रा, मोहम्मद तारिक, संजय शर्मा, शिवेंद्र यादव, अफ़ाक़ अली, बारिश पठान, कुर्रतुल हक़.नगर महासचिव जावेद खान. नगर अध्यक्ष आदि लोग मौजूद रहे।

जिले भर मे विरोध प्रदर्शन में मौजूद रहे।

विसौली मे जिलाध्यक्ष ठा वेदपाल सिंह तहसील अध्यक्ष राहूल गुप्ता अखिलेश मिश्रा धीरेश सिंह अवधेश शर्मा सर्वेश उपाध्याय प्रमोद मिश्रा हिरदेशतिवारी आई एम खान अखिलेश श्री वास्तव कुलदीप सक्सैना सर्वेश उपाध्याय अनुभव मिश्रा जीशान सिददीकी अवधेश शर्मा सर्वेश गुप्ता पवन चौहान राशिद खान माजिद खान एवम दातागंज मे जिलाप्रभारी नरेन्द्र सिंह तहसील अध्यक्ष कुलदीप सिंह गौरव सक्सैना विल्सी मे तहसील अध्यक्ष अखिलेश सोलकी भानु चौहान सुनील राणा सहसवान मे तहसील अध्यक्ष अवीर सक्सैना मुशाहिद रजा की उपस्थित मे सैकडो पत्रकारो ने विरोध प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री के नाम पांच सूत्रीये मागो को लेकर ज्ञापन सौपे ।

वरिष्ठ नागरिक मित्र मंडल के द्वारा होली मिलन समारोह हुआ संपन्न: रंगों के साथ उमंग और उल्लास का संगम

(विशेष संवाददाता अनिरुद्ध मिश्रा की रिपोर्ट)

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश की डीएलएफ कॉलोनी में होली का उल्लास छाया हुआ है, और इसी कड़ी में डीएलएफ कॉलोनी में स्थानीय वरिष्ठ नागरिक मित्र मंडल द्वारा भव्य होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। रंगों और संगीत से सराबोर इस कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों ने भाग लिया और एक-दूसरे को गुलाल एवं चंदन टीका लगाकर भाईचारे और प्रेम का संदेश दिया। होली मिलन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती के.डी मिश्रा वरिष्ठ पत्रकार एवं मुख्य संपादक आरएफटी न्यूज़ ने कहा, ₹होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने का अवसर भी है।₹ उन्होंने सभी को सद्भाव और प्रेम बनाए रखने का संदेश दिया।

कार्यक्रम में लोकगीत, नृत्य और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने समा बांध दिया। फाग गीतों पर लोगों ने जमकर ठुमके लगाए, और गुलाल उड़ाकर माहौल को और रंगीन बना दिया। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी ने इस उत्सव का आनंद लिया।

स्वादिष्ट पकवानों का आनंद

होली मिलन समारोह में गुजिया, ठंडाई, दही भल्ले और पकौड़े जैसे पारंपरिक व्यंजन भी परोसे गए, जिनका सभी ने जमकर लुत्फ उठाया। समारोह का समापन ₹होली है !₹ के जोशीले नारों और सौहार्दपूर्ण माहौल में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अमरदीप गुलाटी वरिष्ठ समाजसेवी एवं वरिष्ठ पत्रकार और वरिष्ठ नागरिक मित्र मंडल के पदाधिकारी गणः-पंडित रामरक्षपाल शर्मा, पंडित राजकुमार शर्मा, आर.डी सिंह , उदयभान राघव, मुकेश पांचाल, ने सभी को धन्यवाद दिया और कार्यक्रम का समापन किया और साथ ही एकता का परिचय दिया।

होली की छुट्टी पर घर जानेवालों के लिए जरूरी खबर, कर लें यह काम वरना लग सकता है चूना

होली की छुट्टियों में घर छोड़कर जाने वालों के लिए एक जरूरी खबर है। दरअसल ग्रेटर नोएडा में हाल ही में बंद घरों में चोरी की कई घटनाएं हुई हैं। पुलिस ने लोगों से घर छोड़ने से पहले किसी विश्वसनीय व्यक्ति को इसकी जिम्मेदारी सौंपने की अपील की है। चोरों से बचने के लिए कई तरह की सावधानियां बरती चाहिए।

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा बसता शहर है। सेक्टर व सोसायटियों में दूर-दराज इलाकों से आकर लोग बसे हैं। ज्यादातर लोग नौकरी पेशा है। होली पर्व पर ज्यादातर लोग अपने फ्लैट अथवा मकानों पर ताला लगा त्योहार की खुशियां मनाने के लिए पैतृक गांव चले जाते हैं।

हर साल त्योहारों के मौकों पर बंद मकानों में चोरी होने की घटनाएं बढ़ जाती है। पुलिस प्रशासन ने गस्त बढ़ाने के साथ ही घर छोड़ने से पहले घर की जिम्मेदारी किसी न किसी को सौंपकर जाने की अपील की है। ताकि सेक्टर व सोसायटियों में बंद मकानों को चोरों की नजरों से बचाया जा सके।

रेकी कर दे रहे अंजाम

चोर शहर में रेकी कर बंद मकानों में चोरी की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। पिछले कुछ दिनों में चोरी की ऐसी कई घटनाएं सामने आई है। चोर पहले सब्जी व फल विक्रेता बनकर बंद मकानों की रेकी करते हैं। और उसके बाद चोरी की घटना को अंजाम देकर फरार हो जाते हैं।

15 दिनों में बंद मकानों में चोरी की कुछ घटनाएं

26 फरवरी 2024 : ग्रेटर नोएडा के बीटा दो कोतवाली क्षेत्र की एनआरआइ सिटी सोसायटी में बंद फ्लैट को निशाना बना बदमाश दो लाख 97 हजार रुपये की नकदी व सोने चांदी के जेवर चोरी कर ले गए। पीड़ित घर का ताला लगाकर दुकान पर गए थे।

28 फरवरी 2024 : ईकोटेक तीन कोतवाली क्षेत्र में वैष्णो देवी के दर्शन करने मकान पर ताला लगाकर गए व्यक्ति के घर चोर 10 हजार रुपये की नकदी, सोने चांदी के जेवर, मोटरसाइकिल व कीमती सामान चोरी करके ले गए।

28 फरवरी 2024 : बीटा दो कोतवाली क्षेत्र के गामा दो सेक्टर में चोर बंद मकान का ताला तोड़कर लाखों रुपये के जेवर के साथ घर का कीमती सामान चोरी करके ले गए। परिवार के लोग महाकुंभ स्नान करने के लिए प्रयागराज गए थे।

28 फरवरी 2024 : बीटा दो कोतवाली क्षेत्र के गामा दो सेक्टर में चोर बंद मकान का ताला तोड़कर लाखों रुपये के जेवर के साथ घर का कीमती सामान चोरी करके ले गए। परिवार के लोग महाकुंभ स्नान करने के लिए प्रयागराज गए थे।

तीन मार्च 2024 : सूरजपुर कोतवाली क्षेत्र के डेल्टा एक सेक्टर में चोर बंद मकान का ताला तोड़कर 20 हजार रुपये की नकदी व 20 लाख रुपये के जेवर चोरी कर ले गए। पीड़ित परिवार घूमने के लिए नैनीताल गया था।

शांत और परोपकारी स्वभाव सुखी जीवन का मूल मंत्र

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

भारतीय संस्कृति, सभ्यता के बारे में हमने साहित्य और इतिहास के माध्यम से और भारत माता की गोद में रहकर पारिवारिक संस्कृति, मान सम्मान, रीति-रिवाजों से इसे प्रत्यक्ष महसूस भी कर रहे हैं। परंतु हमारे बड़े बुजुर्गों के माध्यम से हमने कई बार सतयुग का नाम सुने हैं,जिसका वर्णन वेस्वर्गलोक़ के तुल्य करते हैं। याने इतनी सुखशांति, अपराध मुक्ति, इमानदारी, शांति सरोवर तुल्य, कोई चालाकी चतुराई गलतफहमी या कुटिलता या भ्रष्टाचार नहीं, बस एक ऐसा युग कि कोई अगर कुछ दिन, माह के लिए बाहर गांव जाए तो अपने घरों को ताला तक लगाने की ज़रूरत नहीं !अब कल्पना कीजिए कि अपराध बोध मुक्त युग !मेरा मानना है कि हमारी पूर्व की पीढ़ियों ने ऐसा युग जिए होंगे तब यह बोध आगे की पीढ़ियों में आया,जिसे सतयुग के नाम से जरूर जाना जाता है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान युग पर बड़े बुजुर्गों में चर्चा की करें तो इस इसे कलयुग नाम देते हैं, याने सभी प्रकार के अपराध बोध से युक्त संसार। हर तरह की बेईमानी, भ्रष्टाचार कुटिलता से भरा हुआ युग !आज भी बुजुर्गों का मानना है कि वह सतयुग फिर आएगा,याने आज की तकनीकी भाषा में अपराध मुक्त, भ्रष्टाचार बेईमानी कुटिलता मुक्त पारदर्शिता और अनेकता में एकता वाले भारत की परिकल्पना का युग।

साथियों बात अगर हम अपराध, भ्रष्टाचार, बेईमानी, कुटिलता से भरे जग की करें तो मेरा मानना है कि इसका मुख्य प्रवेश द्वार क्रोध, उत्तेजित स्वभाव व लालच है जिसमें आपराधिक बोध प्रवृत्ति का जन्म होता है और व्यक्ति क्रोध में हिंसा, अपराध, लालच, भ्रष्टाचार, बेईमानी और कुटिलता के अमानवीय कृति और अन्य गलत कार्यों की ओर मुड़ जाता है और आगे बढ़ते ही चले जाता है जब जीवन के असली महत्व का पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। क्रोध की अभिव्यक्ति हमारे अंदर की कुंठा, हिंसा व द्वेष के कारण भी हो सकती है। वर्तमान काल में अपराधों के बढ़ने का एक प्रमुख कारण भीषण क्रोध ही है।क्रोध से उत्पन्न हुएअपराधों के औचित्य को सिद्ध करने के लिए क्रोधी व्यक्ति कुतर्क कर दूसरे को ही दोषी सिद्ध करता है। एक दोष को दूर करने के लिए अनेक कुतर्क पेश करता है। क्रोध में व्यक्ति आपा खो देता है। क्रोध में अंततः बुद्धि निस्तेज हो जाती है और विवेक नष्ट हो जाता है। क्रोध का विकराल रूप जुनून है। आदमी पर जुनून सवार होने पर वह जघन्य से जघन्य अपराध कर बैठता है। जुनून की हालत में उसे मानवीय गुणों का न बोध रह पाता है और न ही ज्ञान। क्रोध मानव का सबसे बड़ा शत्रु है, बहुत बड़ा अभिशाप है।

साथियों बात अगर हम शांत, परोपकारी स्वभाव ही जीवन का मूल मंत्र की करें तोअभिभावकों, शिक्षकों को बच्चों को यह शिक्षा देना है और हम बड़ों को यह स्वतः संज्ञान लेना है कि माचिस की तीली बनने की बजाय शांत सरोवर बनना होगा, जिसमें कोई अंगारा भी फेंके तो स्वयं ही बुझ जाए, बस ! यह भाव अगर हम मनीषियों के हृदय में समाहित हो जाए तो यह विश्व फिर सतयुग का रूप धारण करेगा जहां किसी तरह का कोई अपराध बोध या गलत काम का भाव नहीं होगा। सभी मनीषी जीव परोपकारी भाव से युक्त होंगे भाईचारा, प्रेम, सद्भाव की बारिश होगी जहां बिना ताले घरबार छोड़ कहीं भी जाने के भाव जागृत होंगे और हमारे बुजुर्गों का सतयुग रूपी सपना साकार होगा।

साथियों बात अगर हम स्वयं को माचिस की तीली याने क्रोधित होने पर विपरीत परिणामों की करें तो, क्रोध मनुष्य को बर्बाद कर देता है और उसे अच्छे बुरे का पता नही चलने देता, जिस कारण मनुष्य का इससे नुक्सान होता है। क्रोध मनुष्य का प्रथम शत्रु होता है। क्रोधी व्यक्ति आवेश में दूसरे का इतना बुरा नहीं जितना स्वयं का करता है। क्रोध व्यक्ति की बुद्धि को समाप्त करके मन को काला बना देता है।

साथियों बात अगर हम क्रोध को नियंत्रित कर समाप्त करने की तकनीकी की करें तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अनुसार क्रोध के नकारात्मक प्रभाव पूरे इतिहास में देखे गए हैं। प्राचीन दार्शनिकों, धर्मपरायण व्यक्तियों और आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतीत होने वाले अनियंत्रित क्रोध का मुकाबला करने की सलाह दी गई है। आधुनिक समय में, क्रोध को नियंत्रित करने की अवधारणा को मनोवैज्ञानिकों के शोध के आधार पर क्रोध प्रबंधन कार्यक्रमों में अनुवादित किया गया है। क्रोध प्रबंधन क्रोध की रोकथाम और नियंत्रण के लिए एक मनो-चिकित्सीय कार्यक्रम है। इसे क्रोध को सफलतापूर्वक तैनात करने के रूप में वर्णित किया गया है। क्रोध अक्सर हताशा का परिणाम होता है,या किसी ऐसी चीज से अवरुद्ध या विफल होने का अनुभव होता है जिसे विषय महत्वपूर्ण लगता है। अपनी भावनाओं को समझना क्रोध से निपटने का तरीका सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। जिन बच्चों ने अपनी नकारात्मक भावनाओं को क्रोध डायरी में लिखा था, उन्होंने वास्तव में अपनी भावनात्मक समझ में सुधार किया, जिससे बदले में कम आक्रामकता हुई। जब अपनी भावनाओं से निपटने की बात आती है, तो बच्चे ऐसे उदाहरणों के प्रत्यक्ष उदाहरण देखकर सबसे अच्छा सीखने की क्षमता दिखाते हैं, जिनके कारण कुछ निश्चित स्तर पर गुस्सा आया। उनके क्रोधित होने के कारणों को देखकर, वे भविष्य में उन कार्यों से बचने की कोशिश कर सकते हैं या उस भावना के लिए तैयार हो सकते हैं जो वे अनुभव करते हैं यदि वे खुद को कुछ ऐसा करते हुए पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर उन्हें गुस्सा आता है, इसके साथ ही एकांत में जाकर ध्यान के माध्यम से क्रोध के विकारों को नष्ट करने का प्रयास करें तो ऋणात्मक ऊर्जा को मोड़कर हम सकारात्मक ऊर्जा से विवेक सम्मत निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि शांत, परोपकारी स्वभाव सुखी जीवन का मूल मंत्र है !स्वयं को माचिस की तीली बनने की बजाए शांति सरोवर बनाएं, जिसमें कोई अंगारा भी फेंके तो स्वयं ही बुझ जाए।क्रोध, उत्तेजित स्वभाव, अपराधिक बोध प्रवृत्ति का मुख्य प्रवेशद्वार है अपराध मुक्त भारत के लिए मनीषियों को क्रोध त्यागना प्राथमिक उपाय है।

होली मिलन समारोह में सभी शहरवासी सपरिवार सादर आमंत्रित है : कृष्ण मुरारी माहेश्वरी (एडवोकेट)

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा, संजय साग़र सिंह। श्रीधाम जन सेवा समिति के द्वारा इस बार होली के पावन अवसर पर एक शानदार होली मिलन समारोह का आयोजन कल यानी मंगलवार को किया जा रहा है।

समिति के अध्यक्ष श्री कृष्ण मुरारी माहेश्वरी (एडवोकेट), संयोजक श्रीनिवास गुप्ता और संरक्षक मोहन गुप्ता (पूर्व पार्षद एवं वरिष्ठ भाजपा नेता) ने इस कार्यक्रम के लिए सभी शहरवासियों को सपरिवार सादर आमंत्रित किया है।

यह रंगारंग होली मिलन समारोह मंगलवार, 11 मार्च को दोपहर 2:00 बजे से प्रारंभ होगा और प्रीतिभोज का आयोजन शाम 5:00 बजे तक लक्ष्मी वाटिका, ट्रांस यमुना कॉलोनी, फेस-1, में किया जाएगा। इस अवसर पर आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने और रंगों की होली मनाने के लिए सभी को आमंत्रित किया गया है।

समिति के पदाधिकारियों ने उम्मीद जताई है कि इस कार्यक्रम में सभी लोग सक्रिय रूप से भाग लेकर इस होली के अवसर को और भी खास बनाएंगे।

लॉन्च से पहले टाटा हैरियर ईवी का दिखा दम, 500किमी. रेंज समेत मिलेंगे प्रीमियम फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा हैरियर ईवी को कंपनी ने पेश किया है। इसमें कई बेहतरीन प्रीमियम फीचर्स दिए गए हैं। टाटा हैरियर ईवी के डिजाइन को इसके ICE मॉडल की तरह रखा गया है बस इसमें कुछ बदलाव किए गए हैं। इसमें ऑल-व्हील ड्राइव (AWD) 500 किमी तक की रेंज और मल्टी-लिंक रियर सस्पेंशन मिल सकते हैं। आइए इसके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ने अपनी प्रोडक्शन-स्पेक Tata Harrier EV को पेश किया है। इसे पेश करने के साथ ही यह कितनी दमदार है यह भी कंपनी ने बता दिया है। इसके शोकेस होने के बाद जल्द लॉन्च होने की उम्मीद है। यह देखने में तकरीबन अपने ICE मॉडल जैसी दिखती है, लेकिन इसमें कई बदलाव भी किए गए हैं। आइए जानते हैं कि मिडसाइज इलेक्ट्रिक एसयूवी Tata Harrier EV में कौन-से फीचर्स देखने के लिए मिलेंगें।

1. डिजाइन

Tata Harrier EV को टाटा मोटर्स की ICE मॉडल की तरह डिजाइन में कुछ छोटे-छोटे बदलाव किए गए हैं, ताकि इसे स्टैंडर्ड मॉडल से अलग दिखाया जा सकें।

फ्रंटः इसपर नया ब्लैंक्ड-ऑफ ग्रिल देने के साथ ही बम्पर के डिजाइन में कुछ बदलाव किया गया है। इसमें कनेक्टेड LED DRLs और LED हेडलाइट्स को पहले की तरह बरकार रखा गया है।

प्रोफाइलः इसमें नए अलॉय व्हील दिए गए हैं, जो एरो-स्पेशिफिक कवर के साथ आते हैं और इसके दरवाजों पर ev बैज दिया गया है।

रियरः इसके पीछे की तरफ कनेक्टेड LED टेललाइट्स दी गई है। इसमें दिए गए बम्पर पहले की तरह है, जो फ्रंट बम्पर के डिजाइन से मेल खाते हैं।

2. इंटीरियर्स

Tata Harrier EV के इंटीरियर्स में ज्यादा बदलाव नहीं किया गया है, जो इसे स्टैंडर्ड कार से ज्यादा अलग नहीं करता है, लेकिन इसमें कुछ प्रीमियम टच दिया गया है। इसमें मॉडर्न और क्लासिक ड्यूल डिस्प्ले सेटअप और चार-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दिया गया है। इसके कॉकपिट में ग्रे और सफेद रंकी की स्कीम दी गई है, जो इसे प्रीमियम लुक देती है।

3. फीचर्स

इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं, जो निम्नलिखित है-

12.3-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम (वायरलेस एप्पल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो के साथ)

10.25-इंच डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले

पैनोरमिक सनरूफ

पावर फ्रंट सीट्स (वेंटिलेशन के साथ)

मल्टी-कलर एम्बियंट लाइटिंग

10-स्पीकर JBL साउंड सिस्टम (सबस्पीकर के साथ)

इसमें कुछ खास EV फीचर्स भी मिलते हैं-

Summon Mode: इसकी मदद से आप कार को कीफॉब से आगे और पीछे मूव कर सकते हैं।

EV-Specific Features: इसमें वेहिकल-टू-लोड (V2L) और वेहिकल-टू-चार्ज (V2C) भी दिया गया है।

Tata Harrier EV

सेफ्टी फीचर्स

सेफ्टी के मामले में Tata Harrier EV को कई सेफ्टी फीचर्स से लैस किया गया है। इसमें 7 एयरबैग्स, ABS, 360-डिग्री कैमरा, इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम, और लेवल-2 एडवांस ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) जैसे फीचर्स लैस है।

4. पावरट्रेन और रेंज

Tata Harrier EV को टाटा की ₹Acti.ev₹ प्लेटफॉर्म पर डेवलप किया गया है, जो इसे काफी बेहतर ड्राइविंग एक्सपीरियं इसमें ऑल-व्हील ड्राइव (AWD), 500 किमी तक की रेंज और मल्टी-लिंक रियर सस्पेंशन मिल सकते हैं।

5. कीमत

टाटा हैरियर ईवी की कीमत करीब 25 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) तक होने की उम्मीग है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला, महिंद्रा XUV9e और BYD Atto 3 जैसी इलेक्ट्रिक गाड़ियों से देखने के लिए मिल सकता है।

डिस्क या ड्रम ब्रेक वाली मोटरसाइकिल, कौन-सी बाइक आपके लिए सही?

परिवहन विशेष न्यूज

डिस्क और ड्रम ब्रेक दोनों ही मोटरसाइकिल के लिए जरूरी ब्रेकिंग सिस्टम है लेकिन दोनों में ही कुछ अंतर है। डिस्क ब्रेक बेहतर ब्रेकिंग परफॉर्मेंस के लिए होते हैं तो ड्रम ब्रेक कम लागत और पारंपरिक होते हैं। हम यहां पर आपको डिस्क और ड्रम ब्रेक के फायदे और नुकसान के साथ ही इनमें से आपके लिए कौन सही रहेगा इसके बारे में बता रहे हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई ऑटोमेकर अपनी मोटरसाइकिल को ऑफर करती है। कंपनियां इसे दो ब्रेक के साथ ऑफर करती है, जो डिस्क और ड्रम ब्रेक है। बाइक में ब्रेकिंग सिस्टम काफी जरूरी पार्ट होता है, जो आपको हादसे से बचाने में मदद करता है। बहुत से लोगों को इन दोनों में से किसे लेना चाहिए इसके बारे में काफी कंफ्यूजन रहता है। इन दोनों के बीच कुछ अंतर होता है, जो आपकी मोटरसाइकिल की परफॉर्मेंस, सुरक्षा, और आपके बजट को प्रभावित करते हैं। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि इन दोनों ब्रेकिंग सिस्टम में कितना अंतर होता है और आपके जरूरत के हिसाब से कौन-सी बाइक बेहतर रहेगी।

ड्रम ब्रेक (Drum Brake)

मोटरसाइकिल में मिलने वाला यह ब्रेकिंग सिस्टम पुराना और परंपरिक है, जो आज भी कई किफायती और छोटी मोटरसाइकिल में ऑफर किया जाता है। इस ब्रेक में एक गोल आकार का ड्रम होता है, जिसके अंदर ब्रेक शूज लगे होते हैं। जब आप ब्रेक लगाते हैं, तो यह शूज ड्रम के अंदर फ्रिक्शन बनाता है, जिससे बाइक की स्पीड को रोकने में मदद मिलती है।

ड्रम ब्रेक के फायदे

ड्रम ब्रेक सिस्टम डिस्क ब्रेक की तुलना में सस्ता होता है, जिससे यह बजट-फ्रेंडली ऑप्शन है।

इसकी कम रखरखाव की जरूरत होती है और यह ज्यादा समय तक बेहतर परफॉर्म करता है।

डिस्क ब्रेक के मुकाबले यह कम गर्मी उत्पन्न करता है, जो ड्रम ब्रेक को लंबे समय तक स्थिर बनाए रखता है।

ड्रम ब्रेक के नुकसान

ड्रम ब्रेक्स की ब्रेकिंग पावर डिस्क ब्रेक के मुकाबले कम होती है, खासकर जब बाकी काफी तेज स्पीम में हो।

लंबे समय तक इस्तेमाल करने पर ड्रम ब्रेक गर्म हो सकते हैं, जिससे ब्रेकिंग सिस्टम में खराबी आ सकती है।

ड्रम ब्रेक्स में ग्रिप की कमी हो सकती है, जिससे ब्रेकिंग में दबाव कम पड़ सकता है।

डिस्क ब्रेक

यह मॉडर्न और ज्यादा प्रभावी ब्रेकिंग सिस्टम है, जो ज्यादातर हाई-स्पीड और प्रीमियम मोटरसाइकिल में देखने के लिए मिलता है। इसमें एक फ्लैट डिस्क होती है, जिसमें कैलीपर्स लगे हुए होते हैं। जब आप ब्रैड पैड्स दबाते हैं, तो यह कैलिपर्स का इस्तेमाल करते हुए घर्षण पैदा करते हैं। यह घर्षण ही बाइक को रोकने में मदद करता है। यह ब्रेकिंग सिस्टम ज्यादा स्थिर और शक्तिशाली ब्रेकिंग प्रदान करता है।

डिस्क ब्रेक के फायदे

यह ड्रम ब्रेक के मुकाबले ज्यादा प्रभावी होता है और शक्तिशाली ब्रेकिंग प्रदान करता है, जिससे बाइक को जल्दी और सुरक्षित तरीके से रोका जा सकता है।

डिस्क ब्रेक की प्रतिक्रिया ड्रम ब्रेक के मुकाबले बहुत तेज होती है, जिससे ड्राइवर को तेज ब्रेक लगाने में आसानी होती है।

डिस्क ब्रेक में ज्यादा गर्मी नहीं पैदा होती है, जिसकी वजह से यह ज्यादा प्रभावी होने के साथ ही लंबे समय तक अच्छा काम करता है।

डिस्क ब्रेक के नुकसान

डिस्क ब्रेक सिस्टम ड्रम ब्रेक के मुकाबले महंगा होता है।

इनकी ज्यादा रखरखाव की जरूरत होती है और बदलने पर भी ज्यादा खर्च आता है।

ज्यादा तापमान में डिस्क ब्रेक पर ज्यादा दबाव पड़ने पर कुछ मामलों में ब्रेकिंग की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

कौन-सी बाइक आपके लिए सही?

आपने ऊपर डिस्क ब्रेक और ड्रम ब्रेक के फायदे और नुकसान के बारे में पढ़ लिया है। अब सवाल उठता है कि इन दोनों में से कौन-सी सही है। अगर आप एक बजट-फ्रेंडली बाइक चाहते हैं, जो शहर के भीतर कम स्पीड पर चलने के लिए उपयुक्त हो, तो ड्रम ब्रेक वाली बाइक ले सकते हैं। वहीं, अगर आप एक तेज और ज्यादा सुरक्षित ब्रेकिंग अनुभव की तलाश में और लंबे सफर पर हाई-स्पीड राइडिंग का आनंद उठाना चाहते हैं, तो डिस्क ब्रेक वाली बाइक खरीद सकते हैं।

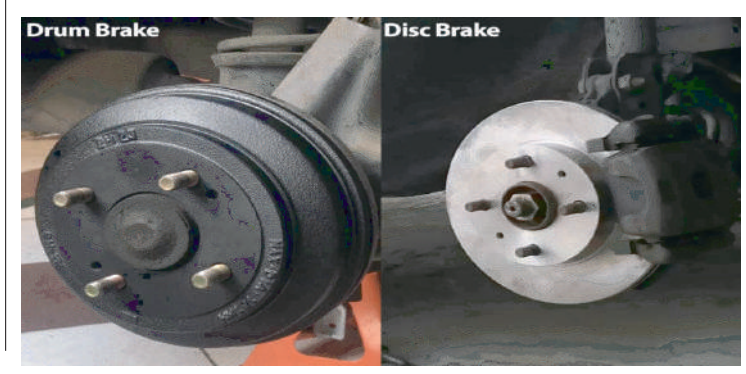

मोटरसाइकिल चोरी होने पर मिलेगा इंश्योरेंस का पूरा पैसा, बस फॉलो करें ये आसान तरीका

परिवहन विशेष न्यूज

मोटरसाइकिल बहुत से लोगों के दिल के करीब होती है। अगर यह चोरी हो जाए तो बाइक के मालिक को काफी समस्याओं को परेशानी का सामना करना पड़ता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि आप किस तरह से आप चोरी हुई बाइक के लिए इंश्योरेंस क्लेम कर सकते हैं। आइए जानते हैं इसके बारे में।

नई दिल्ली। चोर किसकी मोटरसाइकिल कब चुरा ले जाएं यह कोई भी नहीं जानता है। वहीं, बाइक्स तो कई लोगों के दिल के करीब होती है और वही चोरी हो जाएं तो लोग काफी परेशान हो जाते हैं। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कुछ आसान तरीके के बारे में बता रहे हैं, जिसे आप अपनी मोटरसाइकिल के चोरी होने के बाद घबराने की जगह अपनाना चाहिए। आइए जानते हैं कि बाइक चोरी होने की स्थिति में आपको तुरंत क्या करना चाहिए।

बाइक चोरी होने पर कैसे करें क्लेम?

1. चोरी की रिपोर्ट दर्ज करें

मोटरसाइकिल के चोरी होने पर सबसे पहले आपको नजदीकी पुलिस थाने में जाकर बाइक के चोरी होने की शिकायत को दर्ज करना होगी। इसके बाद पुलिस आपको FIR (First Information Report) या FIR नंबर देगी, जो क्लेम प्रक्रिया के लिए काफी जरूरी होता है।

2. बीमा कंपनी को सूचित करें

बाइक चोरी होने की पुलिस रिपोर्ट दर्ज करने के बाद आपको अपनी बीमा कंपनी को चोरी की घटना के बारे में सूचित करना होगा। बीमा कंपनी को आप बाइक के चोरी होने की बात फोन, ईमेल या बीमा कंपनी के वेबसाइट के जरिए बता सकते हैं।

3. बीमा कंपनी से क्लेम फॉर्म प्राप्त करें

बाइक चोरी होने पर जब बीमा कंपनी से चोरी के क्लेम के लिए सूचित करने के साथ ही इससे इससे संबंधित डॉक्यूमेंट और क्लेम फॉर्म के विवरण को भी प्राप्त करें। इसके बार क्लेम फॉर्म को सही से भरकर जमा करें।

4. जरूरी दस्तावेज जमा करें

बीमा कंपनी आपसे जो डॉक्यूमेंट मांगे उसे सही से तैयार करें और सबमिट करें, जो निम्नलिखित हो सकते हैं

पुलिस FIR की प्रति

बाइक का रजिस्ट्रेशन प्रमाणपत्र (RC)

बीमा पॉलिसी की कॉपी

पहचान पत्र (जैसे आधार कार्ड)

मोटरसाइकिल का चेसिस नंबर और इंजन नंबर

5. बीमा कंपनी के जरिए सर्वे

कुछ बीमा कंपनियां क्लेम प्रोसेस के दौरान अपनी तरफ से आपका सर्वे भी करवा सकते ही कि आपकी बाइक सही में चोरी हुई है या नहीं। इसके साथ ही वह बाइक की चोरी की रिपोर्ट और दस्तावेजों की जांच करते हैं।

6. क्लेम मंजूरी

बाइक चोरी होने के सभी डॉक्यूमेंट की जांच के बाद बीमा कंपनी आपके क्लेम को प्रोसेस करती है। अगर सब कुछ सही पाया जाता है, जो आपको मोटरसाइकिल के बीमा की राशि या उसके सही हिस्से का भुगतान किया जाता है, जो आपकी पॉलिसी के अनुसार होगा।

होंडा सिटी के बेस वेरिएंट को खरीदकर है घर लाना, दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद कितनी जाएगी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में Honda की ओर से मिड साइज सेडान के तौर पर Honda City को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इसके बेस वेरिएंट SV को खरीदने का मन बना रहे हैं तो इसके लिए दो लाख रुपये की Down Payment देने के बाद कितने रुपये महीने की EMI देनी (Honda City SV Down Payment and EMI) होगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी वाहन निर्माता Honda की ओर से भारतीय बाजार में सेडान कार के तौर पर Honda City की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से इस मिड साइज सेडान कार को कई वेरिएंट्स में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। अगर इसके बेस वेरिएंट SV को दो लाख रुपये की Down Payment देने के बाद घर लाना हो तो कितने रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda City SV Price

होंडा की ओर से सिटी को मिड साइज सेडान कार सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसके बेस वेरिएंट के तौर पर SV को उपलब्ध करवाया जाता है। इस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 11.82 लाख रुपये है। इस गाड़ी को अगर दिल्ली में खरीदा जाता है तो करीब 1.18 लाख रुपये आरटीओ और करीब 56 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलावा इसके लिए 11820 रुपये का टीसीएस चार्ज भी देना होगा। जिसके बाद Honda City SV on road price करीब 13.68 लाख रुपये के आस-पास हो जाता है।

दो लाख Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर आप इस गाड़ी के बेस वेरिएंट SV को खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 11.68 लाख रुपये को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको 9 फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 11.68 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने 18796 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप 9 फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 11.68 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 18796 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Honda City SV के लिए करीब 4.10 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 17.78 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Honda की ओर से City को कंपनी मिड साइज सेडान कार के तौर पर ऑफर करती है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Maruti Ciaz, Hyundai Verna, Skoda Slavia, Volkswagen Virtus जैसी मिड साइज सेडान कारों के साथ होता है।

विजय गर्ग

माइक्रोप्लास्टिक्स भोजन, पानी और यहां तक कि रोजमर्रा की रसोई की वस्तुओं में पाए जाते हैं

नल के पानी में माइक्रोप्लास्टिक भी होता है, लेकिन बहुत कम मात्रा में। एक अच्छा पानी फिल्टर प्लास्टिक मलबे के 90% तक को खत्म कर सकता है। खपत से पहले पानी उबालना फायदेमंद हो सकता है, लेकिन विशेषज्ञ सावधानी बरतते हैं कि प्लास्टिक के पाइप या कंटेनर गर्म करने से जहरीले रसायनों को मुक्त किया जाता है। अधिकांश देशों में नल का पानी सुरक्षित, अच्छी तरह से नियंत्रित और बोतलबंद पानी की तुलना में एक बेहतर विकल्प है।

रक्त, फेफड़े, मस्तिष्क में पाए जाने वाले माइक्रोप्लास्टिक्स

माइक्रोप्लास्टिक के लिए बोतलबंद की तुलना में सुरक्षित पानी टैप करें प्लास्टिक के कंटेनरों में भोजन गर्म करने से बचें माइक्रोप्लास्टिक्स हर जगह हवा में हम सांस लेते हैं, हम जो पानी पीते हैं, और जो खाना हम खाते हैं। शोधकर्ताओं ने मानव रक्त, फेफड़ों और यहां तक कि मस्तिष्क में ऐसे छोटे प्लास्टिक के टुकड़ों की खोज की है। हालांकि उनसे पूरी तरह से बचना व्यावहारिक रूप से असंभव है, लेकिन हमारे द्वारा ली गई राशि को कम करने के लिए कदम हैं।

ब्रेन मेडिसिन में प्रकाशित एक अध्ययन हाल ही में माइक्रोप्लास्टिक की खपत को कम करने के आसान उपायों को इंगित करता है। हालांकि हम अभी तक स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में जानने के लिए सब कुछ नहीं जानते हैं, ये कण हमारे लिए फायदेमंद नहीं हैं। यहां आपके एक्सपोजर को कम करने के लिए कुछ आसान कदम दिए गए हैं।

बोतलबंद पानी के बजाय नल का पानी पिएं वाशिंगटन पोस्ट के अनुसार, माइक्रोप्लास्टिक के सबसे बड़े स्रोतों में से एक बोतलबंद पानी है। यह दिखाया गया है कि एक लीटर बोतलबंद पानी में प्लास्टिक के 240,000 छोटे टुकड़े हो सकते हैं। ये बड़े पैमाने पर मानव आंख द्वारा पता लगाया जा सकता है की तुलना में छोटे हैं ।

नल के पानी में माइक्रोप्लास्टिक भी होता है, लेकिन बहुत कम मात्रा में। एक अच्छा पानी फिल्टर प्लास्टिक मलबे के 90% तक को खत्म कर सकता है। खपत से पहले पानी उबालना फायदेमंद हो सकता है, लेकिन विशेषज्ञ सावधानी बरतते हैं कि प्लास्टिक के पाइप या कंटेनर गर्म करने से जहरीले रसायनों को मुक्त किया जाता है। अधिकांश देशों में नल का पानी सुरक्षित, अच्छी तरह से नियंत्रित और बोतलबंद पानी की तुलना में एक बेहतर विकल्प है।

प्लास्टिक के कंटेनरों में भोजन गर्म करने से बचें

कई लोग प्लास्टिक के कंटेनरों में भोजन स्टोर करते हैं और उन्हें माइक्रोवेव में गर्म करते हैं। यह खतरनाक हो सकता है। शोध में पाया गया है कि हीटिंग प्लास्टिक मिनटों के भीतर आपके भोजन में लाखों प्लास्टिक कणों को छोड़ सकता है। इसके बजाय, भोजन को गर्म करने के लिए ग्लास या सिरेमिक का उपयोग करें। संतरे के रस या टमाटर सॉस जैसे अम्लीय खाद्य पदार्थों को प्लास्टिक में न रखें, न ही गर्म भोजन। गर्मी और अम्लता भोजन में अतिरिक्त प्लास्टिक रसायनों को फैलाना बनाते हैं।

नमक और मसालों से सतर्क रहें

माइक्रोप्लास्टिक भी आपके नमक और मसालों में गुप्त हो सकता है। 2023 में अनुसंधान ने विभिन्न लवणों का नमूना लिया और हर एक में प्लास्टिक पाया। हिमालयन गुलाबी नमक और काले नमक में सबसे अधिक निहित था, इसके बाद आयोडीन युक्त टेबल नमक कम से कम होता है। यद्यपि नमक हमारे आहार का एक अनिवार्य घटक है, उच्च-गुणवत्ता और कम-परिष्कृत नमक का चयन जोखिम को कम कर सकता है। प्रतिष्ठित स्रोतों से उपयोग करने और खरीदने से पहले मसाले धोने से भी मदद मिलती है।

ताजा खाद्य पदार्थों के लिए ऑप्ट

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों में ताजे खाद्य पदार्थों की तुलना में अधिक माइक्रोप्लास्टिक का स्तर होता है। एक अध्ययन द्वारा नमूने वाले सभी 16 प्रोटीन युक्त प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में माइक्रोप्लास्टिक का पता लगाया गया था। समुद्री भोजन, विशेष रूप से ब्रेडेड झींगा, में उच्च माइक्रोप्लास्टिक स्तर भी थे। नियम के अनुसार, आपके भोजन को जितना कम संसाधित किया जाएगा, उतना ही कम माइक्रोप्लास्टिक होगा। ताजा सब्जियां, फल और साबुत अनाज एक बेहतर विकल्प हैं।

ढीली पत्ती वाली चाय का प्रयोग करें

नायलॉन चाय बैग जैसे प्लास्टिक की चाय की थैलियां गर्म पानी में डूबी होने पर अरबों माइक्रोप्लास्टिक और नैनोप्लास्टिक के कणों को छोड़ती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक कप चाय में छोटे प्लास्टिक के टुकड़े हो सकते हैं। इसे रोकने के लिए, प्लास्टिक चाय बैग के बजाय ढीली पत्ती वाली चाय का विकल्प चुनें।

माइक्रोप्लास्टिक्स हर जगह हैं, लेकिन छोटे बदलाव मदद कर सकते हैं। ताजा भोजन चुनें, कांच या सिरेमिक कंटेनरों का उपयोग करें, और कम जोखिम के लिए फ़िल्टर किए गए नल का पानी पीएं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

शिक्षा खड़ी बाजार में

विजय गर्ग

शिक्षा अपने आप में एक अत्यंत पवित्र शब्द है, जिसके आगे सारी विशेषताएं और दावे अधूरे नजर आते हैं। शिक्षा का प्रभाव हमारे वर्तमान ही नहीं, अतीत पर भी पूरी तरह छाया हुआ था । सच यह है कि शिक्षा को अगर हम किताबी ज्ञान तक सीमित करें, तो यह ठीक नहीं है। इसका स्वरूप किताबी ज्ञान से कहीं ज्यादा है। वर्तमान में शिक्षा बाजार उन्मुख हो गई है। चाहे शिक्षा देने वाले हों या शिक्षा लेने वाले, सभी शिक्षा को धन अर्जित करने का साधन मानकर चलते हैं। आज के दौर में शिक्षा अर्जन का उद्देश्य धनार्जन है। दसवीं, बारहवीं जैसी कक्षाओं के परिणाम तय करते हैं कि बच्चा किस जगह जाना चाहता है। मगर उसकी आंतरिक इच्छा भले ही कुछ और करने की हो, फिर भी उसको जबरदस्ती भेड़चाल में धकेलने की पूरी व्यवस्था समाज में मौजूद है।

ऐसी स्थिति के लिए स्कूल-कालेज के साथ-साथ बच्चों के माता-पिता भी उतने ही जिम्मेदार हैं। बड़े-बड़े कोचिंग केंद्र लोगों को डाक्टर, इंजीनियर, आएएस आदि बनाने में जुटे हैं, जबकि बच्चे की मर्जी जाने या उसके मन को टटोले बिना कोचिंग केंद्रों में उनके दाखिले करा दिए जाते हैं, भले ही बच्चा दबाव झेलने में सक्षम हो या न हो । समझने की बात यह है कि क्या पढ़-लिखकर केवल अपने उत्थान के लिए कुछ करना हमारे देश के लिए काफी होगा। मूलतः यह सोच ही बाजारीकरण की द्योतक है। पढ़ाई के नाम पर जिस तरह से फीस वसूली जाती है, उससे निर्धन बच्चों का भविष्य आमतौर पर अधर में रह जाता है। हालांकि ऋण सुविधाओं और सरकारी योजनाएं कुछ हद तक इसमें राहत पहुंचाती हैं, लेकिन कुछ लोगों तक ही इनकी पहुंच होती है, बाकी के सभी इस तंत्र का शिकार बनते हैं। उन्हें छोटी-छोटी नौकरियों के लिए भी काबिल नहीं समझा जाता। हिंदी माध्यम के विद्यार्थी के मुकाबले अंग्रेजी माध्यम का विद्यार्थी इसलिए योग्य समझा जाता है, क्योंकि उसका अंग्रेजी का ज्ञान कहीं ज्यादा है।

प्रबुद्ध वर्ग के लोगों को पता है कि कहां कैसा माहौल है। मगर सब ओर यही स्थिति है कि जहां जैसा चल रहा है, वैसा चलने दो । इतना बड़ा देश है, इतनी सारी समस्याएं हैं, किस-किस पर ध्यान दिया जाए? ऐसी सोच लेकर सभी लोग अपने जीवन को चलाने में विश्वास रख रहे हैं और फिर आज के इस युग में 'मैं क्यों बोलूं' वाली धारणा का प्रचार अधिक ही असर दिखा रहा है। सड़क पर चलते हुए हम बहुत से गरीब बच्चों को देखते हैं । न जाने किसके अंदर कैसी प्रतिभा छिपी है। हमने शिक्षा कि सारी बुनियादी बातों को दरकिनार कर दिया है। सरकारी व्यवस्था सबके लिए समान शिक्षा, अनिवार्य, निशुल्क और शिक्षा की व्यवस्था करती है, लेकिन क्या इन स्कूलों से पढ़े बच्चे उन बच्चों के साथ प्रतियोगिता में खरे उतर सकते हैं जो महंगे स्कूल में पढ़ते हैं ? इस व्यवस्था को बदलना आसान काम नहीं है।

शिक्षा श्रेष्ठि वर्ग के लिए प्रतिष्ठा और मान-सम्मान का विषय हो गई है। ऐसे संस्थानों में गरीब प्रवेश ही नहीं कर सकता, जहां कुलीनता ही पहचान है। शिक्षा और आर्थिक जीवन के बीच यह टकराव खतरनाक है। आज नहीं तो कल, कोई ऐसा वक्त भी आ सकता है जब यह बाजारीकृत व्यवस्था अपना एक वर्ग खड़ा कर ले, या फिर ऐसा हो कि उपेक्षित वर्ग इसके खिलाफ खड़ा हो जाए। दोनों ही स्वरूप उचित नहीं है। समाज में संतुलन समाज की आधारभूत आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति के जरिए शिक्षा के क्षेत्र काफी परिवर्तन को शामिल किया गया है। जब-जब शिक्षा की नीति में परिवर्तन हुआ है, तब-तब रोजगार का क्षेत्र भी प्रभावित हुआ । 1986 की शिक्षा नीति में तकनीकी क्षेत्र को बढ़ावा दिया गया था। इससे कई रोजगार क्षेत्रों में तेजी दर्ज की गई, तो कहीं भारी गिरावट भी आई। अब एक बार फिर नई शिक्षा नीति प्रस्तावों के मुताबिक कला, विज्ञान, व्यावसायिक विषयों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होने और इसे बच्चों के लिए शिक्षा को सहज बनाने में सक्षम होने की संभावना जताई जा रही है। इसके तहत, राष्ट्रीय नवाचार अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा स्कूल के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम तैयार किया जाएगा। इससे हमारी व्यवस्था में सकारात्मक सुधार की अपेक्षा है।

उच्च शिक्षा की तरफ देखा जाए तो पता चलता है कि उच्च शिक्षा के लिए जो व्यवस्था स्थापित करने का उद्देश्य है, उसमें एक विषय भारत में विदेशी विश्वविद्यालय का भारत में प्रवेश करने का है। सवाल है कि ये विश्वविद्यालय शिक्षा को बेहतर करेंगे या महंगी व्यवस्था को स्थापित करेंगे। यह भविष्य ही बताएगा कि वर्तमान शिक्षा नीति पिछली अव्यवस्थाओं को दूर करने में सक्षम होती है या नहीं। फिर भी इसमें मातृभाषा में शिक्षा को अच्छी पहल कहा जा सकता है। हमारा यही उद्देश्य होना चाहिए कि शिक्षा सर्व समाज के लिए उपलब्ध हो और सस्ती हो। महंगी पढ़ाई केवल कुछ लोगों तक ही पहुंच सकती है।

शिक्षा एक मानवाधिकार है। इस अधिकार की पूर्णता तभी हो सकती है, जब इसे सभी तक बराबर के साथ पहुंचाया जाए । शिक्षा को सरकारों के आने-जाने के क्रम नहीं जोड़ना चाहिए । उद्देश्य यही होना चाहिए कि वह आर्थिक मुद्दों से प्रभावित न हो और न ही किसी अन्य भावना से प्रभावित हो, बल्कि यह उन्मुक्त और सर्वसुलभ और सस्ती होनी चाहिए। बाजारीकरण की संस्कृति से अप्रभावित शिक्षा ही समाज को सुसंस्कृत और समय स्वरूप देने का माद्दा रखती है। हम सभी एक समान शिक्षा की तरफ जाएं और शिक्षा को व्यवसाय न मानकर देश की व्यवस्था का मूल मानें तो जिस तरह से देश के सैनिक सीमा पर डटे रहते हैं, वैसे ही शिक्षक समाज को मिलेंगे और वैसे ही विद्यार्थी भी देश को प्रगति के पथ पर आगे लेकर जाएंगे।

कहानी: बिंदास लड़की

विजय गर्ग

फिर घर कैसे चलाएंगे 10 हजार रुपए में, खासकर शादी के बाद. कम से कम 5 हजार रुपए तो मेरे ऊपर ही खर्च होंगे.

बुजुर्गों की तरफ से तो रिश्ता तय हो चुका था. कुंडली मिलान, लेनदेन सब कुछ. बस, अब सब लड़कालड़की की आपसी बातचीत पर निर्भर था. बुजुर्गों ने तय किया कि लड़कालड़की आपस में बात कर एकदूसरे को समझ लें. कुछ पूछना हो तो आपस में पूछ लें. उन्हें एकांत दिया गया.

लड़के को शांत देख लड़की ने कहा, ''आप कुछ पूछना चाहते हैं?'' लड़का शरमीला था. मध्यमवर्गीय परिवार से था. उस ने कहा, ''नहीं, बुजुर्गों ने तो सब देखपरख लिया है. उन्होंने तय किया है तो सब ठीक ही होगा. आप दिखने में अच्छी हैं. मुझे पसंद हैं, बस इतना पूछना था कि'' लड़का पूछने में लड़खड़ाने लगा तो उस पढ़ीलिखी सभ्य लड़की ने कहा, ''पूछिए, निस्संकोच पूछिए, आखिर हमारीआप की जिंदगी का सवाल है.''

लड़के ने पूछा, ''यह शादी आप की मरजी से मेरे कहने का अर्थ यह है कि आप राजी हैं, आप खुश हैं न.''

''हां, लड़की ने बड़ी सरलता और सहजता से कहा. नहीं होती तो पहले ही मना कर देती.'' लड़का चुप रहा. अब लड़की ने कहा, ''मैं भी कुछ पूछना चाहती हूं आखिर मेरी भी जिंदगी का सवाल है. उम्मीद है कि आप बुरा नहीं मानेंगे.''

''नहींनहीं, निस्संकोच पूछिए,'' लड़के ने कहा. वह मन ही मन सोचने लगा, 'लड़की पढ़ीलिखी है तो तेज तो होगी ही लेकिन इतनी बिंदास और बेबाक.'

''आप का शादी के पहले कोई चक्कर, मेरा मतलब कोई अफेयर था क्या?''

''क्या,'' लड़के ने लड़की की तरफ देखा.

''अरे, आप घबरा क्यों गए? कालेज में पढ़े हो. इश्क वगैरा हो जाता है. इस में आश्चर्य की क्या बात है? सच बताना. एकदूसरे से क्या छिपाना?''

''जी, वह एक लड़की से. बस, यों ही कुछ दिन तक. अब सब खत्म है,'' लड़के ने झेंपते हुए कहा.

''मेरा भी था,'' लड़की ने बेझिझक कहा.

''अब नहीं है.''

लड़का लड़की का मुंह ताकने लगा.

''क्यों, क्या हुआ? जब आप ने कहा तब मैं ने तो ऐसा रिएक्ट नहीं किया जैसा आप कर रहे हैं. आप ने तो पूछने पर बताया, मैं ने तो ईमानदारी से बिना पूछे ही बता दिया.''

''अच्छा, यह बताओ कि महीने में कितना कमा लेते हो?'' लड़की ने आगे पूछा.

''जी, 10 हजार रुपए.''

''मैं ने वेतन नहीं पूछा, टोटल कमाई पूछी है.''

''जी, मैं घूस नहीं लेता,'' लड़के ने ताव से कहा.

''अच्छा, पैदाइशी हरिश्चंद्र हो या अन्ना आंदोलन का असर है या फिर, डरते हो'' लड़की हंस कर बोली.

''यह क्या कह रही हैं आप?''

''तो आप ईमानदार हैं.''

''जी, बिलकुल.''

''फिर घर कैसे चलाएंगे 10 हजार रुपए में, खासकर शादी के बाद. कम से कम 5 हजार रुपए तो मेरे ऊपर ही खर्च होंगे. क्या शादी के बाद अपनी पत्नी को घुमाने नहीं ले जाएंगे. बाजार, सिनेमा, कपड़े, जेवर वगैरावगैरा.''

लड़के बेचारे के तो होश गुम थे. अच्छाखासा इंटरव्यू हो रहा था उस का. अब उसे लड़की बड़ी बेशर्म और उजड्ड मालूम हुई.

लड़की ने कहा, ''देखो, शादी के बाद मुझे कोई झंझट नहीं चाहिए. अपनी मांबहन को पहले ही समझा कर रखना. मुझे सुबह आराम से उठने की आदत है और हां, शादी के बाद अकसर लड़झगड़ कर लड़के अलग हो जाते हैं. और सारी गलती बहुओं की गिना दी जाती है. सो अच्छा है कि हम पहले ही तय कर लें कि किसी भी बहाने से बिना लड़ाईझगड़े के अलग हो जाएं. तुम्हारा तो सरकारी जौब है, ट्रांसफर करा लेना. दूसरी बात रही पहनावे की तो मुझे साड़ी पहनने की आदत नहीं है. कभी शौक से, कभी मजबूरी में पहन ली तो और बात है. मैं सलवारसूट, जींस पहनती हूं और घर में बरमूड़ा, रात में नाइटी. बाद की टैंशन नहीं चाहिए, यह मत पहनो, वह मत करो, पहले ही बता देती हूं कि पूजापाठ मैं करती नहीं.''

लड़की कहे जा रही थी और लड़का सुने जा रहा था. लड़के को लगा कि वह भी क्या समय था कि जब लड़की लजाते, शरमाते उत्तर देती थी, हां या न में. लड़का पूछता था, खाना बनाना आता है, गाना गाना जानती हो, कोई वाद्ययंत्र गिटार, सितार वगैरा बजा लेती हो, सिलाईबुनाई आती है, मेरे मातापिता का ध्यान रखना होगा और लड़की जीजी,

हांहां करती रहती थी और अब जमाना इतना बदल गया.

उसे तो यह लगा मानो वह साक्षात्कार दे रहा हो. यह भी सही है कि अधिकतर जोड़े शादी के बाद अलग हो जाते हैं. दुल्हनें अपनी मांगों पर अड़ कर परिवार के 2 टुकड़े कर देती हैं. फिर अपनी मनमरजी का ओढ़नेपहनने से ले कर खाने में नमक, मिर्च कम ज्यादा होने पर सासबहू की खिचखिच शुरू हो जाती है. यह कह तो ठीक ही रही है, लेकिन शादी से पहले ही इतनी बेखौफ और निडर हो कर बात कर रही है तो बाद में न जाने क्या करेगी? यह तो नीति और मर्यादा के विरुद्ध हो गया. अभी पत्नी बनी नहीं और पहले से ही ये रंगढंग. लड़का तो फिर लड़का था. उस ने भी कहा, ''शादी से पहले का भी बता दिया और शादी के बाद का भी. तुम से शादी करने का मतलब मांबाप, भाईबहन सब छोड़ दूं, तुम्हारे शौक पूरे करता रहूं. कर्तव्य एक भी नहीं और अधिकार गिना दिए. यह क्या बात हुई?''

लड़की ने कहा, ''जो होता ही है वह बता दिया तो क्या गुनाह किया. सच ही तो कहा है, इस में क्या जुर्म हो गया.''

''यह कोई तरीका है कहने का. यह कहती कि तुम्हारा घर संभालूंगी, बड़ेबूढ़ों का आदर करूंगी, सब का ध्यान रखूंगी तो अच्छा लगता.''

''ये सब तो आया के काम हैं. बाई है घर पर काम वाली या हमेशा मुझ से ही सब करवाने के चक्कर में हो. धोबिन भी मैं, बरतन, झाड़पोंछा वाली भी मैं. पत्नी चाहिए या नौकरानी,'' लड़का भी उत्तर देने लगा, ''क्या जो पत्नियां अपने घर का काम करती हैं वे नौकरानी होती हैं?''

''अरे, आप तो नाराज हो गए,'' लड़की ने अपनी हंसी दबाते हुए कहा. सरकारी नौकरी में हो, ऊपरी कमाई तो होगी ही. फिर मेरे पिता दहेज में वाशिंग मशीन तो देंगे ही, कपड़े धुलाई का काम आसान हो जाएगा. मैं तो कुछ बातें पहले से ही स्पष्ट कर रही हूं जैसे मुझे 3-4 सीरियल देखने का शौक है और उन्हें मैं कभी मिस नहीं करती. अब ऐसे में कोई काम बताए तो मैं तो टस से मस नहीं होने वाली, अपने दहेज के टीवी पर देखूंगी. चिंता मत करना. किसी और के मनपसंद सीरियल के बीच में नहीं घुसूंगी.

लड़के के चेहरे के बदलते रंग को देख कर लड़की ने कहा, ''आप को बुरा तो लग रहा होगा, लेकिन ये सब नौर्मल बातें हैं जो हर घर में होती हैं. मेरी ईमानदारी और साफगोई पर आप को खुश होना चाहिए और आप हैं कि नाराज दिख रहे हैं.''

''नहीं, मैं नाराज नहीं हूं मुझे कुछ कहना है,'' लड़के ने कहा.

''हां, मुझे गोलगप्पे, चाट, पकोड़ी खाने का बड़ा शौक है, कम से कम हफ्ते में एक बार तो ले ही जाना होगा.''

लड़की बोले जा रही थी, बोले जा रही थी. बेवकूफ थी, कमअक्ल थी. समझ नहीं आ रहा था लड़के को.

लड़की ने फिर पूछा, ''सुनो, तुम शराब, सिगरेट तो नहीं पीते. तंबाकू तो नहीं खाते.''

''जी जी'' लड़के की जबान फिर लड़खड़ाई.

''जी जी, क्या हां या नहीं,'' लड़की ने थोड़े तेज स्वर में पूछा.

अब आप ने इतना सच बोला है तो मैं भी क्यों झूठ बोलूं. कभीकभी दोस्तों के साथ पार्टी वगैरा में.

''देखो, मुझे शराब और सिगरेट से सख्त नफरत है. इस की बदबू से जी मिचलाने लगता है. तंबाकू खा कर बारबार थूकने वालों से तो मुझे घिन आती है. सब छोड़ना होगा. पहले सोच लो. तुम्हारे मातापिता को ये सब पहले बताना चाहिए था, वे तो कह रहे थे कि लड़का बड़ा शरीफ और सज्जन है. झूठ बोलने की क्या जरूरत थी?''

''आप मेरे मातापिता को अभी से झूठा कह रही हैं,'' लड़के ने गुस्से में कहा. आप में शर्म नाम की कोई चीज ही नहीं है. लड़की भी गुस्से में बोली, ''शराबीकबाबी, तुम झूठे और तुम्हारे मांबाप भी. शर्म तुम्हें आनी चाहिए कि मुझे. तगड़ा दहेज भी चाहिए. लड़की भी ऐसी चाहिए कि तुम कुछ भी करो. लड़की मुंह बंद कर के रहे. कल शराब पी कर हाथ भी उठाओगे. फिर सुबह माफी मांगोगे कि नशे में हो गया. ये सब मैं सहने वाली नहीं. सीधा रिपोर्ट करूंगी. सब के सब अंदर हो जाओगे. नए जमाने की पढ़ीलिखी लड़की हूं. अपने राइट्स जानती हूं.''

इस से ज्यादा सुनना लड़के के बस में नहीं था. वह गुस्से से बाहर निकल आया. मांबाप कुछ समझतेपूछते कि उस ने कहा, ''यह शादी नहीं हो सकती. फौरन वापस चलिए,'' लड़का गाड़ी में बैठ गया.

''क्या हुआ? क्या हुआ?'' कहते हुए लड़की के परिवार वाले दौड़े.

लड़के ने कहा, ''अपनी लड़की से पूछ लेना.''

लड़का अपने परिवार के साथ गाड़ी में बैठ कर उड़नछू हो गया.

''अरे, अभागिन, क्या कह दिया तूने,'' लड़की की मां ने गुस्से से लड़की से कहा. इतना अच्छा रिश्ता हाथ से निकल गया. जन्मपत्री भी मिल रही थी. सरकारी नौकरी वाला लड़का मिलता कहां है आजकल.

लड़की ने अपने बचाव में कह दिया लागलपेट कर, ''अरे मां, अच्छा हुआ, बात करवा दी आप ने. लड़का एक नंबर का शराबीकबाबी है. किसी लड़की से अफेयर की बात भी कह रहा था और भी न जाने क्याक्या बताया मां उस ने.'' लड़की के मांबाप ने मान भी लिया. जब अपनी ही लड़की बताए तो मांबाप विश्वास क्यों नहीं करेंगे. फिर कौन सी लड़की होगी जो अपनी शादी अपने हाथ से तोड़ कर अपना भविष्य बरबाद करेगी.

रात को लड़की ने अपने कमरे में जा कर मोबाइल लगाया.

''हाय, जानेमन कैसे हो?''

''क्या हुआ?''

''होना क्या था. उलटे पांव भगा दिया साले को.''

''वैरी गुड डार्लिंग, लेकिन अब आगे?''

''आगे क्या? प्यार करते हो तो आ कर बात करो मेरे मांबाप से.''

''नहीं माने तो.''

''नहीं माने तो हमें कौन सा लैलामजनूं बन कर भटकना है. कोर्ट मैरिज कर लेंगे.''

''लेकिन उस में 1 महीना लगता है. उस के पहले कोई और आ गया तो.''

''तो ठीक है यार, मंदिर में कर लेंगे.''

''लेकिन यह बताओ, आखिर तुम ने कहा क्या उस लड़के से जो वह भाग गया.''

''सच कहा, केवल सच.''

''सच सुन कर भाग गया.''

''अरे, आजकल सच बरदाश्त कौन करता है.''

''और तुम्हारा सच बरदाश्त कर लेता तो.''

''तो कर लेती.''

''क्या क्या कहा?''

''हां, कर लेती यार, आजकल सच्चा आदमी मिलता कहां है?''

''और मेरा क्या होता?''

''तुम कौन से देवदास बने घूमते. ढूंढ़ लेते कोई और.''

''बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करतेकरते हम सचमुच कितने प्रैक्टिकल हो गए हैं. दिल तो जैसे है ही नहीं. न आत्मा, न मन, न जमीन, बस मुनाफा मोटी तनख्वाह, कितनी बेशर्म और बेहया हो गई है हमारी सोच. बिलकुल मशीन हो गए हैं हम लोग,'' उधर से प्रेरमी का दार्शनिक स्वर सुनाई दिया.

लड़की ने कहा, ''ओए, ज्यादा जज्बातजमीर की बातें मत कर. जल्दी से कंपनी का टारगेट पूरा कर. 4 भोलेभाले, भविष्य की चिंता करने वालों को सपने दिखा, कमा, लूट और अपनी जगह पक्की कर.''

''मान लो, मैं किसी वजह से तुम से शादी न कर सकूं, मना कर दूं किसी मजबूरी के कारण या कोई और पसंद आ जाए, तब क्या होगा तुम्हारा,'' प्रेरमी का स्वर गंभीर था.

''तो क्या होगा कुछ नहीं, मुझे पुरानी फिल्मों की मीनाकुमारी समझ रखा है क्या? तुम नहीं तो और सही, नहीं तो''

''अच्छा, ठीक है. अब यह बकवास बंद कर. रात बहुत हो गई है. आई लव यू बोल और फोन रख,'' लड़का हंसते हुए बोला.

''ओ के कल मिलते हैं.''

''ओ के, बाय गुडनाइट.''

''बाय, स्वीट ड्रीम्स''

''और दोनों तरफ से मोबाइल बंद हो गया.''- देवेंद्र मिश्रा

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

सेबी ने सख्त किए SME IPO के नियम, अब नहीं होगा निवेशकों के हितों से खिलवाड़

परिवहन विशेष न्यूज

सेबी (SEBI) ने लघु एवं मध्यम उद्यमों (SME) के आईपीओ के नियमों को सख्त कर दिया है। अब आईपीओ के लिए कम से कम दो वर्षों में ₹1 करोड़ का संचालन लाभ अनिवार्य होगा। प्रमोटर आईपीओ का अधिकतम 20% हिस्सा ही बेच सकेंगे। विक्रेता शेयरधारक 50% से अधिक हिस्सेदारी नहीं बेच पाएंगे। सेबी ने न्यूनतम आवेदन आकार बढ़ाकर दो लॉट कर दिया है ताकि छोटे निवेशकों को अधिक सुरक्षा मिले।

नई दिल्ली। कैपिटल मार्केट रेगुलेटर सेबी (SEBI) ने लघु एवं मध्यम उद्यमों (SME) के आईपीओ से जुड़े नियमों को कड़ा कर दिया है। नए नियमों के तहत प्रमोटर अब ऑफर फॉर सेल (OFS) के तहत कुल आईपीओ का 20% से अधिक हिस्सा नहीं बेच पाएंगे। इसके अलावा, विक्रेता शेयरधारकों को अपनी मौजूदा हिस्सेदारी के 50% से अधिक बिक्री की अनुमति नहीं होगी।

आईपीओ के लिए मुनाफे की शर्त अनिवार्य

अब एसएमई को आईपीओ लाने के लिए पिछले तीन वित्त वर्षों में से कम से कम दो वर्षों तक न्यूनतम ₹1 करोड़ का संचालन लाभ (Operational Profit) दिखाना अनिवार्य होगा। यह नियम उन कंपनियों को हतोत्साहित करेगा जो बिना स्थिर लाभ के बाजार से पूंजी जुटाना चाहती हैं।

सेबी ने SME IPO में गैर-संस्थागत निवेशकों (NII) के लिए आवंटन पद्धति को मुख्य बाजार (Mainboard) के अनुरूप बनाने का फैसला किया है। इससे निवेशकों को अधिक पारदर्शिता और समान अवसर मिलेगा।

सामान्य कॉरपोरेट उद्देश्य (GCP) के लिए सीमा तय

सेबी ने एसएमई आईपीओ से जुटाई गई राशि में से सामान्य कॉरपोरेट उद्देश्य (GCP) के लिए अधिकतम 15% या ₹10 करोड़ (जो भी कम हो) की सीमा तय की है। इससे IPO के फंड का दुरुपयोग रोकने में मदद मिलेगी।

SME IPO में डीआरएचपी (DRHP) की प्रक्रिया हुई पारदर्शी

अब SME IPO में ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (DRHP) को 21 दिन तक सार्वजनिक टिप्पणियों के लिए उपलब्ध रखा जाएगा। साथ ही, DRHP तक आसान पहुंच के लिए समाचार पत्रों में घोषणाएं प्रकाशित करने और QR कोड शामिल करने की जरूरत होगी।

आईपीओ फंड से प्रमोटरों का कर्ज चुकाना मना

सेबी ने स्पष्ट कर दिया है कि एसएमई आईपीओ से जुटाए गए फंड का इस्तेमाल प्रमोटर, प्रमोटर समूह या संबंधित पक्षों के कर्ज चुकाने में नहीं किया जा सकेगा। इससे यह सुनिश्चित होगा कि कंपनियां IPO से प्राप्त पूंजी का सही उपयोग करें।

न्यूनतम आवेदन आकार बढ़ा, निवेशकों को मिलेगा सुरक्षा कवच

अब एसएमई आईपीओ के लिए न्यूनतम आवेदन आकार को बढ़ाकर दो लॉट कर दिया गया है। इससे छोटे निवेशक बिना पर्याप्त रिसर्च किए केवल शेयर की बढ़ती कीमतों को देखकर जल्दबाजी में निवेश नहीं करेंगे। कॉरपोरेट अनुपालन विशेषज्ञ मकरंद एम. जोशी के अनुसार, ₹सेबी का यह कदम एसएमई आईपीओ से जुड़ी अटकलों को कम करेगा और छोटे निवेशकों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा।"

वायदा कारोबार में भी सोने की कीमतों में तेजी

नई दिल्ली। एमसीएक्स पर वायदा कारोबार में अप्रैल डिलीवरी वाले सोने के अनुबंध की कीमत 698 रुपये बढ़कर 84,917 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। एलकेपी सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट रिसर्च एनालिस्ट - कमोडिटी एंड करेंसी, जतीन त्रिवेदी, ने कहा, ₹पिछले सप्ताह 1.60 प्रतिशत मुनाफावसूली के बाद सोने में तेजी बनी हुई है। यह ताजा तेजी ऐसे समय में आई है, जब वैश्विक अनिश्चितता बनी हुई है, साथ ही अमेरिका और यूक्रेन के नेताओं के बीच सौदे की बातचीत को लेकर तनाव भी बना हुआ है।"

डॉलर में उतार-चढ़ाव के कारण सोने में निवेश को सुरक्षित माना जा रहा

त्रिवेदी के अनुसार, मौजूदा टैरिफ चिंताओं और डॉलर में उतार-चढ़ाव के कारण सोने में निवेश को अब भी सुरक्षित मान रहे हैं। हालांकि, रूस-यूक्रेन संबंधों या वैश्विक व्यापार टैरिफ में कोई भी सकारात्मक विकास कीमतों पर दबाव डाल सकता है। इसके अलावा, मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर मई अनुबंध के लिए चांदी वायदा कीमत 1,193 रुपये या 1.26 प्रतिशत बढ़कर 95,521 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अप्रैल डिलीवरी वाले सोने का वायदा भाव 34.80 डॉलर यानी 1.22 प्रतिशत बढ़कर 2,883.30 डॉलर प्रति औंस हो गया। इस बीच, हाजिर सोना 16.52 डॉलर बढ़कर 2,874.35 डॉलर प्रति औंस हो गया।

सोने पर आगे के रुख के लिए अमेरिकी बाजार के पीएमआई आंकड़ों का इंतजार

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक (कमोडिटीज) सौमिल गांधी ने कहा, ₹सोमवार को सोने में मामूली बढ़त दर्ज की गई, क्योंकि सौदेबाजी और सुरक्षित निवेश की मांग ने कीमती धातुओं को समर्थन दिया।₹ अबांस होल्डिंग्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी चिंतन मेहता के अनुसार, बाजार मुद्रास्फीति के संकेतों के लिए सोमवार को जारी होने वाले अमेरिकी विनिर्माण कीमतों और पीएमआई आंकड़ों पर नजर रख रहे हैं, जबकि इस सप्ताह के अंत में गैर-कृषि रोजगार आंकड़ों की भी प्रतीक्षा की जा रही है। मेहता ने कहा कि मौद्रिक नीति और सर्राफा कीमतों की दिशा के बारे में जानकारी के लिए फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) के सदस्यों के आगामी वक्तव्यों पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

कौन होगा आईआरडीएआई का अगला चेयरमैन? वित्त मंत्रालय ने मंगाया आवेदन

परिवहन विशेष न्यूज

वित्त मंत्रालय ने IRDAI चेयरमैन पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं क्योंकि देबाशीष पांडा का कार्यकाल 13 मार्च 2025 को समाप्त हो रहा है। इस पद के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 6 अप्रैल 2025 है। उम्मीदवारों को कम से कम 30 वर्षों का अनुभव होना चाहिए और उन्होंने सरकारी सचिव राज्य सरकार या बड़ी वित्तीय संस्थाओं के CEO के रूप में काम किया हो।

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय ने इंश्योरेंस रेगुलेटर- भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI) के चेयरपर्सन पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। मौजूदा चेयरमैन देबाशीष पांडा का कार्यकाल 13 मार्च को खत्म हो रहा है। इस पद के लिए आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 6 अप्रैल 2025 तय की गई है। आइए जानते हैं कि चेयरपर्सन की सैलरी कितनी होगी और बाकी सभी डिटेल।

IRDAI चेयरमैन के चयन की प्रक्रिया

देबाशीष पांडा ने 14 मार्च 2022 को IRDAI चेयरमैन का पदभार संभाला था। उन्हें तीन साल के कार्यकाल के लिए नियुक्त किया गया था। इससे पहले वह वित्त मंत्रालय के अंतर्गत वित्तीय सेवा विभाग (DFS) में सचिव थे।

IRDAI द्वारा जारी एक अधिसूचना के अनुसार, चेयरमैन पद के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को कम से कम 30 साल वर्क एक्सपीरियंस होना चाहिए। उन्हें भारत सरकार के सचिव या उसके समकक्ष स्तर, राज्य सरकार या अन्य संस्थानों में कार्य करने का अनुभव होना चाहिए।

कौन कर सकता है आवेदन?

केंद्र सरकार के सचिव या समकक्ष स्तर पर कार्य कर चुके हों।

राज्य सरकार या अन्य नियामक संस्थानों में नेतृत्वकारी भूमिका निभा चुके हों।

किसी बड़ी वित्तीय संस्था के CEO या समकक्ष पद पर कार्य कर चुके हों।

IRDAI के चेयरमैन का वेतन

IRDAI अधिनियम, 1999 के अनुसार, कोई भी व्यक्ति 65 साल की उम्र के बाद चेयरमैन पद पर नहीं रह सकता। पद खाली होने की तारीख (13 मार्च 2025) के अनुसार उम्मीदवार के पास कम से कम दो वर्ष की सेवा बची होनी चाहिए। इसका मतलब है कि उम्मीदवार की आयु 63 साल से अधिक नहीं होनी चाहिए। IRDAI चेयरमैन को ₹5.62 लाख प्रति माह का वेतन दिया जाएगा। हालांकि, सरकारी आवास और गाड़ी की सुविधा नहीं दी जाएगी।

सरकार का अंतिम निर्णय

सरकार ने स्पष्ट किया है कि अगर प्रशासनिक कारणों से आवश्यकता पड़ी तो चयन प्रक्रिया को किसी भी चरण में रद्द या वापस लिया जा सकता है। इस नियुक्ति की प्रक्रिया फाइनेंशियल सेक्टर रेगुलेटरी अप्वाइंटमेंट सर्च कमेटी (FSRASC) की सिफारिशों के आधार पर की जाएगी। समिति को यह अधिकार होगा कि वह योग्यता के आधार पर उन व्यक्तियों को भी नामांकित कर सकती है जिन्होंने आवेदन नहीं किया है। इसके अलावा, असाधारण उम्मीदवारों के लिए पात्रता, योग्यता और अनुभव मानदंडों में छूट देने का भी प्रावधान है।

दाल के बढ़ते रकबे से जगी है आत्मनिर्भरता की उम्मीद, पांच वर्षों में सरकार ये है लक्ष्य

केंद्र सरकार ने अगले पांच वर्षों में दालों के मामले में आत्मनिर्भर होने का लक्ष्य रखा है जो उत्पादन एवं खपत का अनुपात देखकर संभव नहीं लग रहा।सरकार का संकल्प एवं दाल की खेती की ओर किसानों के बढ़ते रुझान ने उम्मीद जगाई है। आयात को शून्य करने के लिए केंद्र ने छह वर्ष के अभियान की शुरुआत की है। लक्ष्य 2029 तक आयात पर निर्भरता खत्म करने का है।

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने अगले पांच वर्षों में दालों के मामले में आत्मनिर्भर होने का लक्ष्य रखा है, जो उत्पादन एवं खपत का अनुपात देखकर संभव नहीं लग रहा। फिर भी सरकार का संकल्प एवं दाल की खेती की ओर किसानों के बढ़ते रुझान ने उम्मीद जगाई है। आयात को शून्य करने के लिए केंद्र ने छह वर्ष के अभियान की शुरुआत की है।

बजट में एक हजार करोड़ रुपये का प्रबंध किया है, जिससे तुअर, उड़द एवं मसूर की उपज बढ़ाने के लिए खरीद एवं भंडारण की व्यवस्था करनी है। लक्ष्य २०२९ तक आयात पर निर्भरता खत्म करने का है। मुश्किल है, लेकिन प्रयास जारी है।

चना और मूंग में आत्मनिर्भरता प्राप्त हो चुकी है : सरकार का दावा है कि चना और मूंग में आत्मनिर्भरता प्राप्त हो चुकी है। तुअर, उड़द और मसूर का उत्पादन बढ़ाने पर काम करना है। इसके लिए किसानों को प्रोत्साहित कर संसाधन देना होगा। प्रथम प्रयास में अरहर, उड़द एवं मसूर की सारी उपज खरीदने का फैसला लिया गया है। पहले कुल पैदावार का सिर्फ 40 प्रतिशत ही बेचा जा सकता था।

बाजार में दालों की आपूर्ति बढ़ेगी : नए नियम से किसानों को फायदा होगा और बाजार में दालों की आपूर्ति बढ़ेगी। उन्नत एवं हाईब्रिड बीज की उपलब्धता भी सहज करनी होगी। आयात नीति को भी अनुकूल बनाना होगा। कृषि मंत्रालय की रिपोर्ट है कि एक दशक में दालहन का उत्पादन 60 प्रतिशत बढ़ा है। इस दौरान सरकारी खरीद में भी 18 गुना वृद्धि हुई है। 2014 में 171 लाख टन से बढ़कर २०२४ में 270 लाख टन उत्पादन हो गया। एक वर्ष में रकबा भी 2.7 प्रतिशत बढ़ा।

कांग्रेस का अल्पज्ञान ठीक नहीं है....

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

'कांग्रेस के संगठन के लोगों के लिए वरिष्ठ नेता राहुल गांधी गुजरात गए। उन्होंने अपने ही कांग्रेस के कार्यकर्ताओं व नेताओं पर उनकी निष्ठा पर सवालिया निशान लगा दिया। इतनी बोखलाहट आखिर क्यों? देश की सबसे पुरानी पार्टी की नाकारात्मक नीतियों के चलते जांबाज साथी दूर होते जा रहे हैं गुजरात जैसे राज्य में कांग्रेस कहां खो गई। यह समझ में नहीं आता कोई भी पार्टी हों या राजनीतिक संगठन जब तक जनमानस के बीच में रहें कर काम नहीं करोगे तब तक सफलता बहुत मुश्किल है। वही राहुल गांधी कांग्रेस के सदस्यों व कार्यकर्ताओं का मान सम्मान नहीं कर रहे हैं। उन्हें सही दिशा में ले जाने हेतु उनका मनोबल बढ़ाने की जरूरत है जबकि वह तो उन पर ही शक कर रहे हैं। जिम्मेदार लोगों को शक की नजरों से देखना ठीक बात नहीं है। राष्ट्रीय कांग्रेस का वहां विज़न अब मानों कहीं गुम सा हों गया है। यह फिर वह अलादीन का चिराग का जिन अब नहीं आता जब जब उसे बुलाने के लिए हाथों से घिसते है बदकिस्मती समाने हार दिखा देती है। वर्तमान कांग्रेस के पास जन हितैषी नीतियों का खत्मा हो चुका है। जनता व कार्यकर्ताओ पर विश्वास नहीं रखना कांग्रेस पार्टी के लिए दुखत है। चारदीवारी की नीतियों को अब तो बंद कर देना चाहिए। खुलकर जनता के साथ आगे आ कर काम करोगे तो राज भी मिलेगा। पर राहुल गांधी सिर्फ दो बातों पर ध्यान देने हेतु बोलते हैं एक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दुसरे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ उनके खोफ पर अपनी पार्टी को सही आईना क्यों नहीं दिखा पा रहे हैं। जो कांग्रेस पार्टी भारत की राजनीति की सिरमौर थी

वह सिर्फ एक दो इशू के ईर्द-गिर्द सिमट गई है। इतनी दूरदर्शी के बाद यह बोखलाहट ठीक नहीं है। संकटों के भंवर में फंसीं कांग्रेस इन सब से निकले के लिए ठोस कदम क्यों नहीं उठाती है। हमेशा बचकानी बातें कह कर राहुल गांधी क्यों दिशाभ्रम फेला रहे हैं। अपनी उसूल फिजूल बातों से बहकाते है वह कहते हैं कि कांग्रेस बब्बर शेर है लेकिन व बंधे हुए हैं। कांग्रेस जन बंधे हुए क्यों है इस पर विचार भी कर लेते तो जबाब समाने होता। कोई भी प्रदेश हो पक्ष विपक्ष दो मजबूत टीम होती है राजनीति के लिए। राजनीतिक दलों को जनमानस का प्रतिनिधित्व करने हेतु प्रेरित किया जाता है। फिर उनके कार्यकर्ताओं को अपनी गाईडलाइन में रहते हुए आजाद विचारों के साथ पूर्ण अभिव्यक्ति से अपने देश भारत के लिए काम करना चहिए। कांग्रेस में तो सबसे ज्यादा चरम पर गुटबाजी बड़े छोटों व जमीनी स्तर पर भी देखी जाती है। लोग नेताओं की जी हुजूरी व लीपापोती में लगे रहने वाले एहसान फरामोश कार्यकर्ता व पदाधिकारी और नेताओं की भरमार है। तभी कांग्रेस पार्टी जैसा मजबूत संगठन टूटता जा रहा है। शेर हो या बब्बर शेर अपनी परिधि में सब आजाद हैं। बंधकर नहीं रखा जा सकता है। उन्हें सिर्फ चिड़ियाघर में ही रखते हैं पिंजरे में। जहां छोटे छोटे बच्चे ठिठोली करते वह से गुजरते हैं। जहां लोगों का मजमा लगा रहता है। कांग्रेस जैसी पार्टी का भविष्य समझ से परे दिखाई देता है। जो राजनीति के लिए बहुत दुखत है, पर उनके अपने नेता राहुल गांधी जब भी कोई बात कार्यकर्ताओं को कहे उन बातों से उनके अंदर का मनोबल बढ़े। उन्हें खरगोश व कछुए की कहानी सुनाना थी। यह शून्य का महत्व बताते तो बड़ी बात होती पर ऐसा हो ना सका ? ऐसे कथनों के कारण ही आज कांग्रेस गढ़ कहे जाने वाले प्रदेश में वह कहीं दिखाई ही नहीं देती है। ऐसा अल्पज्ञान ठीक नहीं है।

भारत में बढ़ रही है बिलेनियर और मिलेनियर की संख्या...

भारत में अरबपति (बिलेनियर) तेजी से बढ़ रहे हैं। हाल ही में 5 मार्च 2025 बुधवार को वैश्विक रियल एस्टेट परामर्श कंपनी नाइटफ्रैंक (ग्लोबल प्रॉपर्टी कंसल्टेंट नाइट फ्रैंक) की ताज़ा रिपोर्ट में इस बात का खुलासा हुआ है। दरअसल, ग्लोबल प्रॉपर्टी कंसल्टेंट नाइट फ्रैंक ने अपनी 'द वेल्थ रिपोर्ट 2025' जारी की है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि अब देश में अरबपतियों की कुल संख्या 2024 में 191 तक पहुंच गई। ये सालाना 12% की ग्रोथ को दर्शाता है ।रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2024 में, भारत में 85,698 हाई-नेट-वर्थ इंडिविजुअल (एचएनडब्ल्यूआई) थे, जिनकी संपत्ति 10 मिलियन डॉलर से अधिक थी, जबकि पिछले वर्ष इनकी संख्या 80,686 थी ।रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि ऐसे एचएनडब्ल्यूआई वर्ष 2028 तक 9.4% बढ़कर 93,753 हो जाएंगे। अकेले 2024 में भारत की अल्ट्रा-रिच पापुलेशन में 6% की सालाना ग्रोथ हुई, जो दुनिया के धनी व्यक्तियों का 3.7% है। गौरतलब है कि संयुक्त राज्य अमेरिका (9,05,413 एचएनडब्ल्यूआई), चीन (4,71,634 एचएनडब्ल्यूआई) और जापान (1,22,119 एचएनडब्ल्यूआई) के बाद भारत वैश्विक स्तर पर चौथे स्थान पर है। वर्ष 2024 में 26 नए अरबपतियों के जुड़ने के साथ, भारत के कुल अरबपतियों की संख्या 191 हो गई है। वास्तव में, ग्लोबल प्रॉपर्टी कंसल्टेंट नाइट फ्रैंक ने भारत में अरबपतियों व करोड़पतियों की संख्या में वृद्धि के जो आंकड़े प्रस्तुत किए हैं, वे यकीनन हमारे देश की आर्थिक प्रगति को दर्शाते हैं। वास्तव में, आज हमारा देश लगातार आर्थिक क्षेत्र में प्रगति पथ पर अग्रसर है। इस क्रम में हाल ही में हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने यह बात कही है कि अब वह दिन दूर नहीं है, जब भारत 5,000 अरब अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा। पाठकों को बताता चलूं कि प्रधानमंत्री ने रोजगार सृजन के लिए कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) और नवोन्मेष में निवेश का आह्वान भी किया है। इतना ही नहीं, इस वर्ष हमारे देश की वित्त मंत्री ने सभी क्षेत्रों के संतुलित विकास को प्रोत्साहित करते हुए 'सबका विकास' थीम के साथ केंद्रीय बजट 2025-26 प्रस्तुत किया था, जिसमें उन्होंने विकसित भारत के व्यापक सिद्धांतों को रेखांकित किया है, जिनमें क्रमशः शून्य गरीबी, शत-प्रतिशत अच्छी गुणवत्ता वाली स्कूली शिक्षा, उच्च गुणवत्ता वाली, सस्ती और व्यापक स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच, सार्थक रोजगार के साथ शत-प्रतिशत कुशल श्रमिक, आर्थिक गतिविधियों में सत्तर प्रतिशत महिलाएँ; तथा किसान हमारे देश को 'विश्व की खाद्य टोकरी' बना रहे हैं, जैसे व्यापक सिद्धांत शामिल हैं। इस वर्ष प्रस्तुत किए गए बजट में कृषि, एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) तथा निवेश (इन्वेस्टमेंट) विकास के प्रमुख इंजन हैं। बहरहाल, ग्लोबल प्रॉपर्टी कंसल्टेंट नाइट फ्रैंक रिपोर्ट यह भी साफतौर पर दर्शाती है कि भारत में एक सकारात्मक व्यापारिक माहौल तैयार हो रहा है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय अरबपतियों की संयुक्त संपत्ति अब 950 बिलियन डॉलर आंकी गई है, जिससे भारत विश्व स्तर पर अमेरिका ($5.7 ट्रिलियन) और चीन ($1.34 ट्रिलियन) के बाद तीसरे स्थान पर आ गया है। गौरतलब है कि यह रिपोर्ट कुछ गंभीर चिंताओं की ओर भी इशारा करती नजर आती हैं। दरअसल, इस रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में एक करोड़ डॉलर से अधिक संपत्ति वाले भारतीयों की संख्या में इसके पिछले वर्ष की तुलना में छह फीसदी का इजाफा हुआ है और अब करोड़पतियों की संख्या के मामले में भारत सिर्फ अमेरिका, चीन और जापान से ही पीछे रह गया है। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि पिछले कुछ समय से हमारे देश में आर्थिक अवसरों की संख्या बढ़ी है और हमारे देश का बाजार काफी विकसित हुआ है। यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि धनवान व्यक्तियों की अगली पीढ़ी धन सृजन और देश के इकोनोमिक डेवलपमेंट (आर्थिक विकास) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। परिणामस्वरूप, उनकी आकांक्षाएँ वैश्विक लक्जरी उद्योग के लिए सर्वोपरि होंगी। सच तो यह है कि जैसे-जैसे भारत की अल्ट्रा-हाई-नेट-वर्थ आबादी का विस्तार जारी रहेगा, वैश्विक लक्जरी ब्रांडों के लिए भारतीय बाजार में अपनी मजबूत उपस्थिति स्थापित करने के नए अवसर सामने आएंगे। विशेष रूप से सुपरयॉट जैसे क्षेत्र काफी हद तक अप्रयुक्त हैं और भारत में विकास की महत्वपूर्ण संभावना रखते हैं ।कहना चाहूंगा कि नाइट फ्रैंक वेल्थ रिपोर्ट 2025 में भारतीय अमीर व्यक्तियों के बीच

लक्जरी कारों के प्रति प्राथमिकता का खुलासा किया गया है, तथा उभरते बाजार अवसरों पर प्रकाश डाला गया है ।मसलन, नाइट फ्रैंक की रिपोर्ट में 'नेक्स्ट जेनरेशन सर्वे' से पता चलता है कि 46.5% लोग लग्जरी कार खरीदने की ख्वाहिश रखते हैं, जिससे ये सबसे पसंदीदा लग्जरी एसेट बन गई है और रियल एस्टेट दूसरे नंबर पर है, जिसमें 25.7% लोग लग्जरी घर खरीदने की इच्छा जताते हैं। गौरतलब है कि प्रीमियम एसेट्स में अन्य पसंदीदा निवेशों में आर्ट कलेक्शन (11.9%), निजी जेट (9.9%), और सुपरयॉट (4%) शामिल हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि लग्जरी प्रॉपर्टी रैंकिंग प्राइम इंटरनेशनल रेजिडेंशियल इंडेक्स, लग्जरी रेजिडेंशियल प्रॉपर्टी ट्रेंड को ट्रैक करता है तथा ये नाइट फ्रैंक रिपोर्ट का ही एक हिस्सा है। गौरतलब है कि इसने 2024 में वैश्विक स्तर पर प्राइम प्रॉपर्टी के वैल्यू में 3.6% की ग्रोथ दर्ज की है ।भारतीय शहरों में दिल्ली 37वें से 18वें स्थान पर पहुंच गया, जहां लग्जरी घरों की कीमतों में सालाना आधार पर 6.7% की बढ़ोतरी हुई, जबकि बेंगलुरु 59वें से 40वें स्थान पर पहुंच गया। इतना ही नहीं, इसमें मुंबई 8वें स्थान से 21वें स्थान पर खिसक गयी है। यहां उल्लेखनीय है कि रिपोर्ट में वर्ष 2028 तक भारत में अमीरों की संख्या में बड़ा उछाल आने की भी बात कही गई है। इतना ही नहीं, रिपोर्ट यह भी बताती है कि भारत में फिलहाल जो 191 अरबपति हैं, उनमें से 26 तो पिछले वर्ष ही इस श्रेणी में शामिल हुए हैं। गौरतलब है कि वर्ष 2019 में यह संख्या महज सात थी। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज का युग सूचना क्रांति, तकनीक और प्रौद्योगिकी का युग है। आज नई-नई कंपनियां देश में निवेश कर रहीं हैं। इससे हमारे देश की आर्थिक परिस्थितियों में काफी हद तक बदलाव आए हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के इस दौर में एंड्रॉयड मोबाइल फोन, इंटरनेट की बढ़ती संस्कृति, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) स्टार्टअप संस्कृति (रणनीतियों को बदलना और कार्यबल का प्रबंधन करना) ने भारत में प्रगति और उन्नयन की नई राहों को जन्म दिया है। पाठकों को बताता चलूं कि स्टार्टअप संस्कृति का एक मूलभूत पहलू उद्यमी मानसिकता है। स्टार्टअप में व्यक्ति सक्रिय, संसाधनपूर्ण दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं, अस्पष्टता को स्वीकार करते हैं और चुनौतियों का सामना करते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस प्रकार की संस्कृति में गति का बहुत महत्व है। स्टार्टअप तेज़ गति वाले वातावरण में काम करते हैं, जहाँ समय एक महत्वपूर्ण संपत्ति है। इसमें निर्णय तेजी से किए जाते हैं, और बाजार की माँगों और ग्राहकों की बदलती ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अनुकूलनशीलता महत्वपूर्ण है। इस संस्कृति के कारण आज हमारा देश फ्रांस, ब्राजील और रूस, अमेरिका, जापान जैसी बड़ी आर्थिक शक्तियों के समक्ष लगातार खड़ा हो रहा है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में क्रिसिल की एक रिपोर्ट के मुताबिक वैश्विक स्तर पर सामरिक तनाव और व्यापार चुनौतियों के बावजूद (विशेषकर अमेरिकी ट्रेड टैरिफ व वैश्विक अस्थिरता के बावजूद) भारतीय अर्थव्यवस्था वित्त वर्ष 2026 में 6.5% की दर से बढ़ने की बात कही गई है। रिपोर्ट बताती है कि भारत की अर्थव्यवस्था अब महामारी से पहले की स्थिति में लौट रही है। दुनिया भर में उतार-चढ़ाव के बावजूद, परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत अब भी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढ़ने वाले देशों में शामिल है। इसकी मुख्य वजह मजबूत आर्थिक नीतियां, कम चालू खाता घाटा, नियंत्रित बाहरी ऋण और पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार हैं, जो सरकार को किसी भी चुनौती से निपटने के लिए आवश्यक लचीलापन प्रदान करते हैं। आज हमारे देश में लाखों लोगों को रोजगार के अवसर मिल रहें हैं। नए व्यवसायों और तकनीकी नवाचारों के चलते समाज में सकारात्मक बदलाव भी आ रहे हैं। विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ अनेक तबकों तक पहुंच रहा है। स्वरोजगार को लगातार प्रोत्साहन मिल रहा है। हर क्षेत्र में नवोन्मेष को लगातार प्रोत्साहन दिया जा रहा है। बहरहाल, अंत में यही कहूंगा कि हमारे देश में अरबपतियों (बिलेनियर) व करोड़पतियों (मिलेनियर) की बढ़ती संख्या यकीनन इस बात का संकेत है कि भारत आर्थिक रूप से लगातार सशक्त व मजबूत हो रहा है, और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी भी बन रहा है, लेकिन भारत की यह उपलब्धि तभी सार्थक सिद्ध होगी, जब इस प्रकार की आर्थिक तरक्की का फायदा सबको समान रूप से मिले, क्यों कि कुछ समय पहले ही यह रिपोर्ट आई थी कि 92 मिलियन भारतीय वयस्कों में से 10,000 सबसे धनी व्यक्तियों के पास औसतन 22.6 बिलियन रुपए (271.91 मिलियन डॉलर) की संपत्ति है, जो देश के औसत से 16,763 गुना अधिक है, जबकि शीर्ष 1 प्रतिशत के पास औसतन 54 मिलियन की संपत्ति है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,

'मॉरीशस-भारत को एक-दूसरे पर पूरा भरोसा', यात्रा से पहले पीएम मोदी बोले- नए अध्याय की होगी शुरुआत

मॉरीशस की दो दिवसीय यात्रा पर रवाना होने से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को कहा कि इस यात्रा से दोनों देशों के बीच संबंधों में नया और उज्ज्वल अध्याय खोलेगा। पीएम मोदी मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस में विशेष अतिथि होंगे। मॉरीशस के पीएम नवीनचंद्र रामगुलाम के निमंत्रण पर 11 और 12 मार्च को पीएम मोदी मॉरीशस में रहेंगे।

नई दिल्ली। पीएम नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि 11 व 12 मार्च, 2025 को उनकी मॉरीशस यात्रा के साथ ही भारत-मॉरीशस द्विपक्षीय रिश्तों के नये अध्याय की शुरुआत होगी। पीएम मोदी सोमवार को आधी रात मॉरीशस की यात्रा के लिए निकलने से पहले जारी एक बयान में यह बात कही है। पीएम मोदी वहां मॉरीशस के 57वें राष्ट्रीय दिवस समारोह में विशेष अतिथि के तौर पर भी हिस्सा लेंगे।

विविधता ही हमारी शक्ति

मॉरीशस को समुद्री सीमा में एक निकट पड़ोसी बताते हुए पीएम मोदी ने कहा है कि भारत का इससे ऐतिहासिक व सांस्कृतिक संबंध रहा है। हम एक दूसरे पर पूरा भरोसा करते हैं और लोकतंत्र के प्रति विश्वास साझा करते हैं, विविधता ही हमारी शक्ति है। दोनों देशों की जनता के बीच ऐतिहासिक संबंध हैं जिस पर हमें गर्व है।

साझेदारी को मजबूत करने का मौका मिलेगा

पीएम मोदी ने कहा कि हमने पिछले 10 वर्षों में आम जनता के हितों को ध्यान रखने वाली परियोजनाओं को बढ़ावा देने पर खास ध्यान दिया है। पीएम मोदी ने विश्वास व्यक्त किया है कि उनकी इस यात्रा के दौरान मॉरीशस के नेताओं के साथ होने वाली वार्ताओं में साझेदारी को और मजबूत करने का मौका मिलेगा।

दोनों देशों में सुरक्षा पर भी होगी चर्चा

दोनों देशों के बीच हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा की स्थिति पर भी चर्चा होगी। सनद रहे कि इसके पहले जब पीएम मोदी ने मॉरीशस की यात्रा की थी तब वहां हिंद प्रशांत क्षेत्र में सभी देशों को सुरक्षित बनाये रखने के लिए "सागर" (सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रीजन) का नारा दिया था।

चीन की आक्रामकता के बाद बढ़ी मॉरीशस की अहमियत

सनद रहे कि मॉरीशस को मिनी भारत भी कहा जाता है। जब से प्रशांत महासागर में चीन की आक्रामक गतिविधियां बढ़ी हैं तब से इस छोटे से देश की अहमियत भी बढ़ गई है। भारत की सामरिक रणनीति में मॉरीशस का काफी महत्व है। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने शनिवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि पीएम मोदी की इस यात्रा के दौरान समुद्री सुरक्षा एक अहम विषय होगा।

हो सकते कई अहम समझौते

भारत समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में मॉरीशस के साथ कई रणनीतिक हितों वाले कदम उठाना चाहता है। मॉरीशस के सहयोग से भारत हिंद महासागर के कुछ अहम हिस्सों पर निगरानी का तंत्र विकसित कर सकता है। भारत व मॉरीशस के बीच कई अहम समझौतों पर भी हस्ताक्षर होंगे।

साइबरशाला: युवाओं के लिए जागरूकता पत्र

परिवहन विशेष न्यूज

प्रिय युवा साथियों,

आज का डिजिटल युग हमें असीमित संभावनाएँ प्रदान करता है, लेकिन इसके साथ ही साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स का उपयोग करते समय सतर्क रहना अत्यंत आवश्यक है। साइबरशाला की ओर से, हम आप सभी से आग्रह करते हैं कि न केवल स्वयं सतर्क रहें, बल्कि अपने परिवार और मित्रों को भी साइबर धोखाधड़ी से बचाने के लिए जागरूक करें।

हम आपको 5 महत्वपूर्ण टिप्स साझा कर रहे हैं, जो आपको ऑनलाइन सुरक्षित रहने में मदद करेंगे:

1. मजबूत पासवर्ड और 2-फैक्टर ऑथेंटिकेशन का उपयोग करें

अपने सोशल मीडिया और बैंकिंग खातों के लिए मजबूत पासवर्ड बनाएं और 2-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA) सक्रिय करें ताकि आपका अकाउंट अधिक सुरक्षित रहे।

2. अज्ञात लिंक और संदिग्ध मैसेज पर क्लिक न करें

फिशिंग अटैक के माध्यम से साइबर अपराधी आपके व्यक्तिगत डेटा को चुराने का प्रयास कर सकते हैं। किसी भी अनजान ईमेल, मैसेज या लिंक पर क्लिक करने से पहले उसकी विश्वसनीयता की जांच करें।

3. सोशल मीडिया पर अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचें

अपनी व्यक्तिगत जानकारी जैसे कि मोबाइल नंबर, घर का पता, बैंक डिटेल्स या अन्य संवेदनशील डेटा सोशल मीडिया पर साझा करने से बचें। साइबर अपराधी इसका दुरुपयोग कर सकते हैं।

4. ऑनलाइन फ्रॉड से बचने के लिए लेन-देन में सतर्कता बरतें

कोई भी ऑनलाइन पेमेंट करने से पहले साइट की प्रामाणिकता जांचें। किसी भी अज्ञात व्यक्ति के साथ बैंकिंग डिटेल्स साझा न करें और केवल सुरक्षित पेमेंट गेटवे का उपयोग करें।

5. संदेह होने पर तुरंत रिपोर्ट करें

अगर आपको किसी प्रकार की साइबर धोखाधड़ी या ऑनलाइन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, तो इसकी शिकायत साइबर सेल, नजदीकी पुलिस स्टेशन या साइबर हेल्पलाइन पर करें। सरकार द्वारा जारी साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर तुरंत संपर्क करें।

युवा शक्ति ही समाज की सबसे बड़ी ताकत है, और आपकी सतर्कता ही साइबर अपराधों को रोकने में सहायक हो सकती है। कृपया इस संदेश को अपने परिवार, दोस्तों और सर्किट में अधिक से अधिक फैलाएं और सभी को सतर्क करें। साथ मिलकर हम एक सुरक्षित डिजिटल भारत का निर्माण कर सकते हैं।

सजग रहें, सतर्क रहें और साइबर जागरूकता को बढ़ावा दें।

सादर,
साइबरशाला टीम

पूरक अनुदान की मांग का दूसरा चरण संसद में पेश, इन मंत्रालयों को पड़ी जरूरत

सरकार ने सोमवार को मार्च में समाप्त होने वाले चालू वित्त वर्ष में 51462.86 करोड़ रुपये अतिरिक्त खर्च करने के लिए संसद से मंजूरी मांगी जिसमें से एक बड़ा हिस्सा पेंशन और सब्सिडी उर्वरक पर खर्च किया जाएगा। सरकार द्वारा मांगा गया सकल अतिरिक्त व्यय 6.78 लाख करोड़ रुपये से अधिक है जिसमें से 6.27 लाख करोड़ रुपये बचत और प्राप्तियों से पूरा किया जाएगा।

नई दिल्ली। चालू वित्त वर्ष 2024-25 में 6,27,044 करोड़ के अतिरिक्त व्यय के लिए सरकार ने सोमवार को पूरक अनुदान मांगों का दूसरा चरण संसद के समक्ष पेश किया। अनुदानों की पूरक मांगों के दूसरे चरण में 52 अनुदान और तीन विनियोजन शामिल हैं जिसके लिए 51,462.86 करोड़ रुपये की मांग की गई है।

इसके अलावा नई सेवा या सेवा से जुड़े नए प्रविधानों के लिए प्रत्येक मद में एक लाख रुपये के हिसाब से 67 लाख रुपए का सांकेतिक प्रविधान भी मांगा जा रहा है।

8,476 करोड़ की मांग

पूरक अनुदान मांगों के तहत यूनिफायड पेंशन स्कीम (यूपीएस) के लिए 7,000 करोड़ की मांग की गई है। रक्षा पेंशन की मद में 8,476 करोड़ की मांग की गई है।

इसके अलावा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, उर्वरक विभाग, यूरिया सब्सिडी, नागर विमानन मंत्रालय, दूरसंचार विभाग, डाक विभाग, रक्षा मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय व कई अन्य विभाग व मंत्रालयों के लिए पूरक मांग की गई है।

क्या होता है पूरक अनुदान?

खर्च के लिए संसद से मंजूर राशि के कम पड़ने पर सरकार संसद से पूरक अनुदान की मांग करती है। इन मांगों पर संसद में चर्चा होती है और फिर वित्त वर्ष के समाप्त होने से पहले इसे पारित किया जाता है।

आगामी 31 मार्च को चालू वित्त वर्ष समाप्त हो जाएगा। चालू वित्त वर्ष के अंतरिम बजट में सरकार ने 44.90 लाख करोड़ रुपये के खर्च का लक्ष्य तय किया था।

केरल के मीनाचिल में 400 लड़कियां 'लव जिहाद' की शिकार!, बीजेपी नेता ने कहा- '24 साल से पहले कर दें बेटियों की शादी'

केरल में भाजपा नेता पीसी जॉर्ज के एक बयान से बवाल मच गया है। उन्होंने दावा किया कि अकेले मीनाचिल तालुक में ही अब तक 400 से अधिक लड़कियां लव जिहाद का शिकार हो चुकी हैं। उन्होंने कहा कि बेटियों को सुरक्षित रखने के लिए 22-23 की उम्र तक शादी कर देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि लड़कियों में केवल 41 लड़कियों की ही वापसी हो पाई है।

कोट्टयम। नफरत भरे भाषण देने के मामले में जमानत पर बाहर आए भाजपा नेता पीसी जॉर्ज ने केरल में ईसाई समुदाय के लोगों से आग्रह किया है कि वह अपनी बेटियों का ब्याह हर हाल में उनके 24 साल के होने तक कर दें। भाजपा नेता जॉर्ज का दावा है कि राज्य के अकेले मीनाचिल तालुक में ही अब तक 400 से अधिक लड़कियां 'लव जिहाद' का शिकार हो चुकी हैं।

बीजेपी नेता के बयान से बढ़ा विवाद

जॉर्ज ने अपने विवादास्पद बयान में विगत रविवार को पाला में आयोजित एक विशेष सम्मेलन में कहा कि मीनाचिल तालुक से गायब होने वाली लड़कियों में केवल 41 लड़कियों की ही वापसी हो पाई है। यहां तक कि इसी शनिवार (आठ मार्च) को एक लड़की घर से जा चुकी है। वह रात 9.30 बजे घर से गई थी और उसकी तलाश अब तक जारी है।

क्या बोले बीजेपी नेता?

भाजपा नेता ने कहा कि वह पूछना चाहते हैं कि अपनी बेटी को 25 बरस की उम्र तक अविवाहित रखने के लिए क्या उनके पिता को दंडित नहीं करना चाहिए? अब इस विषय पर चर्चा किए जाने की आवश्यकता है।

जॉर्ज ने कहा कि एक लड़की का विवाह 22 या 23 की उम्र तक कर दिया जाना चाहिए। अगर उसकी उम्र 28-29 हो जाती है तो वह कमाने लगती है और वह शादी नहीं करती। उसका परिवार भी उसकी आय का हिस्सेदार बन जाता है। यहीं से समस्या शुरू होती है। इसलिए अपने बेटियों को मुसलमानों के 'लव जिहाद' के चंगुल से बचाने के लिए उनकी समय रहते शादी कर दें।

पीसी जॉर्ज की लोगों से खास अपील

उल्लेखनीय है कि ईसाई बहुल मीनाचिल तालुक सीरियन कैथोलिक आबादी के प्रभुत्व वाला है। जिस कार्यक्रम में भाजपा नेता पीसी जार्ज ईसाई समुदाय के लोगों से यह आग्रह कर रहे थे, वह पाला में आयोजित किया गया जिसका आयोजन भी पाला के बिशप जोसेफ कालालरंगट ने कराया जो केरल कैथोलिक बिशप काउंसिल (केसीबीसी) के आयोग से संबद्ध हैं जो क्षेत्र में नशीली दवाओं के दुष्चक्र को

विपक्ष के हंगामे के बीच वोटर आईडी कार्ड में गड़बड़ी पर बड़ा खुलासा, ज्यादातर 2013 के पहले ही बने

वोटर आईडी मामले में संसद में विपक्ष ने जमकर हंगामा किया। तत्काल चर्चा का नोटिस खारिज होने के बाद समूचे विपक्ष ने सदन से वॉकआउट कर दिया। मगर इस बीच मतदाता फोटो पहचान पत्र मामले में बड़ा खुलासा हुआ है। अब सामने आया कि जिन इपिक नंबरों की शिकायत की गई हैं... उनमें से अधिकांश 2013 से पहले ही बने थे।

नई दिल्ली। मतदाता फोटो पहचान पत्र (इपिक) के नंबरों से जुड़ी गड़बड़ियां जगजाहिर है। चुनाव आयोग भी इस गलती को स्वीकार कर चुका है। बावजूद इसके कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस सहित दूसरे विपक्षी दल इस मुद्दे को लेकर संसद में सरकार को जिस तरह से घेरने में जुटे है, जैसे इपिक नंबरों की यह गड़बड़ी उसने ही कराई है।

हालांकि इस बीच इपिक नंबरों को लेकर चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है, उसमें तृणमूल कांग्रेस ने जिन नकली इपिक नंबरों को लेकर चुनाव आयोग से शिकायत की थी, उनमें से पड़ताल में बड़ी संख्या में इपिक वर्ष 2008 से 2013 के बीच बने हुए है।

जांच का दिया गया आदेश

सूत्रों के मुताबिक आयोग ने इन डुप्लीकेट इपिक नंबरों को लेकर तृणमूल कांग्रेस की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए इसकी जांच का आदेश दिया है। इस बीच एक ही नंबर वाले पश्चिम बंगाल और हरियाणा के जो भी इपिक तृणमूल कांग्रेस ने मुहैया कराए थे, उनकी जांच में पता चला है कि इनमें से बडी संख्या में इपिक वर्ष 2008 से 2013 के बीच के बने हुए है। इस दौरान कुछ उदाहरण भी दिए गए है, जैसे शिकायत में क्रम संख्या 62 और 82 के सामने के जो इपिक दिए गए है, वे 2008 और 2013 के बने हुए है।

2000 से शुरू हुई गड़बड़ी

गौरतलब है कि आयोग पहले से साफ कर चुका है कि इपिक नंबरों की यह गड़बड़ी 2000 से शुरू हुई है, जो कई राज्यों की ओर से एक जैसे इपिक सीरियल नंबरों के अपनाए जाने से पैदा हुई है। हालांकि अब अगले तीन महीने में ही इन्हें ठीक करके इसकी जगह विशिष्ट इपिक नंबर मुहैया कराए जाएगा।

एम्बुलेंस को मालगाड़ी ने टक्कर मारी

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : रायगडा से कोरापुट होते हुए मलकानगिरी जाने वाली केईआर रेलवे लाइन पर एक मालगाड़ी ने अनंत नेत्र अस्पताल की एम्बुलेंस को टक्कर मार दी। आज जब कल्याणसिंहपुर प्रखंड के शिकारपाई पंचायत के कनिपई, कंजम जोड़ी, झाकुडू, बेतलांग और चक्रकालंग गांवों के लोग कुछ मरीजों की आंखों की सर्जरी के लिए एंबुलेंस (रोगीबुहा) से अनंत नेत्र अस्पताल ले जा रहे थे, तो उन्हें कनिपई के पास रेलवे लाइन पार करनी पड़ी।जब एंबुलेंस शिकारपाई और भालूमास्का स्टेशनों के बीच रेलवे लाइन के पास पहुंची, तो अचानक एक मालगाड़ी आ गई और एंबुलेंस को 100 मीटर तक धकेलती चली गई। हालांकि, ड्राइवर और एंबुलेंस में सवार आठ अन्य मरीज, जिनमें एक आशा भी शामिल है, सुरक्षित पाए गए। मालगाड़ी के ब्रेक लगने से एम्बुलेंस में सवार लोगों की जान बाल-बाल बच गई। बताया गया है कि एक ही स्थान पर लगभग तीन बार दुर्घटनाएं हुई हैं। क्षेत्रवासियों ने बताया कि उक्त रेलवे लाइन पर ओवरब्रिज या अंडरब्रिज निर्माण के लिए रेलवे, सांसद, विधायक और जिला मजिस्ट्रेट द्वारा संयुक्त सुनवाई में बार-बार लिखित रूप से अवगत कराने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की गई है। वाहन को दो घंटे से लाइन से नहीं हटाया गया है और लोग स्वयं ही उसे लाइन से

राज्य में भीषण गर्मी, फैलती जंगल की आग: 16 जगहों पर बड़े पैमाने पर आग, जंगल की आग में ओडिशा देश में दूसरे नंबर पर

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: राज्य में जैसे-जैसे तापमान बढ़ रहा है, जंगल की आग भी उसी दर से फैल रही है। 2,253 स्थानों पर जंगल तेजी से जल रहे हैं। मलकानगिरी, नबरंगपुर, सुनाबेड़ा, कालाहांडी, रायगढ़ा, सुंदरगढ़, बालीगुडा और अथमल्लिक वन क्षेत्रों में भीषण आग लग गई है। पिछले सप्ताह जंगल में आग लगने की घटनाओं में तेलंगाना के बाद ओडिशा दूसरे स्थान पर है।केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, 2 मार्च के बाद से ओडिशा में जंगल में आग लगने की घटनाएं देश में दूसरी सबसे अधिक दर्ज की गई हैं। भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआई) के एसएनपीपी मॉडल के अनुसार, 2,253 स्थानों पर जंगल जल रहे हैं। MDIS के आंकड़ों के अनुसार, 333 स्थानों पर जंगल जल रहे हैं। कोरापुट सर्कल के रायगडा रेंज, बोरीगुम्मा रेंज, मोटू रेंज, बाइपारीगुडा और झारीगांव रेंज में कई स्थानों पर जंगल जल रहे हैं। मलकानगिरी के मैथिली रेंज, कोडिंग्गा रेंज, उमरकोट रेंज, नारायणपटना रेंज, कोटपाड़ और सेमिलिगुड़ा रेंज में कई जगहों पर जंगल जल रहे हैं। भवानीपटना सर्कल के सुनाबेड़ा रेंज, नुआपाड़ा रेंज, जयपटना रेंज, सिनापल्ली रेंज, खारियार रेंज, कागा रेंज और हरिशंकर रेंज में जंगल जल रहे हैं। इसी तरह, सुंदरगढ़ जिले के राउरकेला सर्किल के गोपालपुर रेंज और हेमगिरी रेंज में भी जंगल जल रहे हैं। कंधमाल, रायगढ़ा, झारसुगुड़ा, बौध, संबलपुर, गंजम, गजपति, झारसुगुड़ा, देवगढ़, अंगुल, मयूरभंज सहित जिले के कई हिस्सों में जंगल की आग भड़की हुई है।

जुस्तजू बे मिसाल, हुस्न भी बाकमाल है जानां।

लब गर ख़ामोश हैं तेरे, तो आंखों से पढ़ लेंगे।
तुम्हारे होंठों पर हम अपने होंठों से लिख देंगे।
न कोई गिला हमें तुमसे, तुम भी तो कह दो न।
जिंदगी सारी हम आपकी खुशियों से भर देंगे।
इश्क़ किया है हमने कोई दिल्लगी नहीं की है।
दुनिया वालों से क्या हमें क्या जहां से लड़ लेंगे।
दिलो जां के तुम कितने क़रीब हो बताएं कैसे।
ये क्या कह दिया के तुम्हें निगाहों से दूर कर देंगे।
तूने दिया जो ज़ख्म वो सीने से लगाए फिरते हैं
मसीहाओं ने पूछा तो कुछ नहीं हम भी कह देंगे।
जुस्तजू बे मिसाल, हुस्न भी बाकमाल है जानां।
हर ग़ज़ल मुश्ताक़ आज हम तेरे ही नाम करदेंगे।

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023